सत्यमेव जयते

# कलाकृति

अर्धवार्षिक पत्रिका (2023-24)

अंक-8 (अक्तूबर से मार्च)

G20 भारत 2023 INDIA

## दिल्ली नगर कला आयोग

# कलाकृति

**अंक-8 (2023-24)**

**संरक्षक**

श्रीमती रुबी कौशल, सचिव

**परामर्शदाता**

श्री राजीव गौड़, सहायक सचिव (तकनीकी)

**संपादक**

श्रीमती कल्पना देवानी, क. अनुवाद अधिकारी

**सहायक**

श्रीमती नेहा, वास्तुक सहायक

श्रीमती पारुल, कनसल्टेंट

श्री हिमांशु, कनसल्टेंट

**अनुक्रमणिका**


1. संदेश
2. सरस्वती वंदना
3. संविधान दिवस
4. आयोग के कार्मिकों के लेख/कविताएं
5. पत्रिका का विमोचन
6. दिल्ली नगर कला आयोग की राजभाषा कार्यांवयन समिति की बैठक
7. कार्यशाला आयोजन
8. छुपे रुस्तम कलाकार
9. राजभाषा अनुच्छेद तथा  प्रावधान
10. साईट विज़िट


आंतरिक परिचालन हेतु गृहपत्रिका में व्यक्त विचारों से प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं।

## संदेश

हिंदी के शब्दों में प्रत्येक भाषा के शब्दों का समावेश है । इस दृष्टि से हिंदी में दूसरी भाषाओं की ग्रहणीयता अत्यंत व्यापक है । हिंदी भाषा की यह अतुलनीय ग्राह्य शक्ति ही है कि व्यवसायिक विज्ञापनों में सबसे अधिक हिंदी भाषा का ही प्रयोग किया जा रहा है । हम देश के किसी भी हिस्से में हों और हमारी भाषा कोई भी क्यों न हो, हम मात्र थोड़े ही प्रयास से हिंदी बोलना और लिखना सीख सकते हैं ।

विश्वास है कि हम सब मिलकर हिंदी भाषा को और अधिक समृद्ध, संपन्न एवं ग्राह्य बनाएगें और विश्व पटल पर स्थापित करने में अपना पूरा योगदान देंगे ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं ।

(अजित पई)
अध्यक्ष

# संदेश

हिंदी की सहजता, सरलता और स्वीकार्यता ने इसे लोकप्रिय बनाया है । भारत के संविधान के अनुसार हिंदी को देश की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है । राजभाषा हिंदी का विकास और प्रगामी प्रयोग सुनिश्चित करने के लिए हम सब को मिलकर प्रयास करना होगा, कार्यालय प्रधान से लेकर नीचे स्तर तक सभी को अपना योगदान देना होगा ।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी ।

पत्रिका के सम्पादक मण्डल, रचनाकारों प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों-कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई व मेरी शुभकामनाएं ।

(मनदीप सिंह)

सदस्य

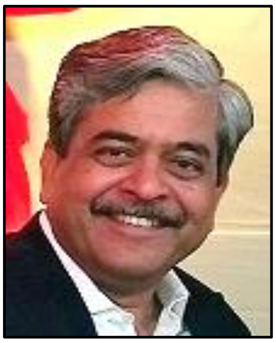

## संदेश

राजभाषा की नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर आधारित है । देश में हिन्दी के पक्ष में एक सकारात्मक माहौल का निर्माण हो चुका है ।आज हिंदी देश के भीतर ही नहीं बल्कि अंतर राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख भाषा के तौर पर अपनी पहचान बना रही है ।

मैं सभी रचनाकारों को बधाई देते हुए आग्रह करता हूं कि वे पूर्व की भांति राजभाषा का अनवरत प्रवाह बनाए रखें ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं ।

आशुतोष

(आशुतोष कुमार अग्रवाल)
सदस्य

# संदेश

हिंदी का विकास तेजी से हुआ है । यह जन-जन का कंठहार बनती पूरे देश में सुशोभित हो रही है । विश्व के अनेक देश हिंदी को सम्मानित दृष्टि से देखते भर नहीं बल्कि उसे अंगीकार भी कर रहे हैं । अब तो हिंदी व्यापार की भाषा है इसलिए स्वाभाविक रुप से विश्वभाषा बन गई है ।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी ।

पत्रिका के रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों-कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं ।

निवेदिता पांडे

(निवेदिता पांडे)
सदस्य

# संदेश

राजभाषा हिंदी भारत की सामाजिक संस्कृति, गौरव और अस्मिता की अभिव्यक्ति प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम है सरकारी कामकाज हिंदी में निष्पादित करना हमारा संवैधानिक दायित्व है । पत्रिका के नियमित प्रकाशन से कार्यालय में हिंदी के लिए सकारात्मक वातावरण तैयार होता है और राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में वृद्धि होती है और कार्मिकों की सृजनशीलता का भी विकास होता है ।

मुझे आशा है कि यह पत्रिका पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में जहां एक ओर लेखन प्रतिभा बढ़ा कर उनके विचारों को मुखरित करेगी, वहीं दूसरी ओर उनमें अधिकाधिक सरकारी कार्य हिंदी में करने की प्रवृति भी विकसित करेगी ।

सुरेंद्रकुमार बागड़े, अपर सचिव (डी),
आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय
सदस्य, दि.न.क.आ.

# <u>सचिव की कलम से</u>

हिंदी आज करोड़ो लोगों की भाषा है और सूचना प्रौध्योगिकी डिजीटलीकरण इत्यादि की क्रांति में हिंदी अपने पंख फैला रही हैं, हिंदी जनसंपर्क व राष्ट्रीय संपर्क की भाषा के रुप में एक मज़बूत कड़ी का काम कर रही है । सभी कार्मिकों से मेरा अनुरोध है कि सरकारी काम काज में सरल और सहज बोलचाल की हिंदी का प्रयोग करें और सरकार की भाषा नीति का समुचित कार्यांवयन सुनिश्चित करने के लिए राजभाषा विभाग द्‌वारा समय-समय पर जारी किए जाने वाले निर्देशों का पूरी तरह से पालन करें और हिंदी पखवाड़े के दौरान ही नहीं, अपितु अपने सरकारी काम हिंदी में करके राजभाषा हिंदी का मान एवं गौरव बढाएं ।

कलाकृति पत्रिका में अपनी लेखनी की प्रतिभा के माध्यम से जो रचनाएं प्रकाशित कर रहे हैं, मैं उसके लिए शुभकामनाएं देती हूं ।

(रुबी कौशल)
सचिव

# संदेश

भाषा किसी भी देश के सामाजिक ,सांस्कृतिक एवं साहित्यिक पहलुओं को जानने व समझने का सशक्त एवं प्रभावी साधन है । भाषा देश की सभ्यता एवं संस्कृति को अगली पीढ़ी तक ले जाने का एक सटीक माध्यम है । भारतवर्ष में हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें सर्वसाधारण की भावनाओं की अभिव्यक्त करने की पूर्ण क्षमता है ।

सभी कार्मिकों से आग्रह करता हूं कि आप यह संकल्प करें कि कार्यालय के अधिकतम कार्यों को हिंदी में करेंगें ताकि हम भारत सरकार द्‌वारा निर्धारित राजभाषा लक्ष्यों के अनुरुप कार्य करने में सफल होंगे ।

पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं ।

राजीव गौड़

(राजीव कुमार गौड़)
सहायक सचिव (तकनीकी)

# सम्पादकीय

हिंदी मात्र एक भाषा ही नहीं हमारी संस्कृति की परिचायक भी है । हिंदी भारत की राजभाषा के साथ-साथ संपर्क भाषा के रुप में निरंतर अपना प्रभाव बढ़ाती जा रही है । इसका प्रयोग डिजिटल जगत में दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है । सफलता, निरंतर प्रयास का सार्थक परिणाम होती है । राजभाषा के संदर्भ में हमारी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम राजभाषा के लिए निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो पाते हैं । सूचना प्रोद्यौगिकी के युग में आज कम्प्यूटर पर हर काम संभव है । हमें कार्यालय के कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिये ताकि हम राजभाषा के लक्ष्यों की प्राप्ति के साथ संवैधानिक दायित्वों का भी निर्वहन कर सकें ।

कलाकृति परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को पत्रिका के प्रकाशन की बधाई देती हूं । आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत है ।

**कल्पना देवानी, क. अनुवाद अधिकारी**

# सरस्वती वंदना

हे शारदे मां, हे शारदे मां,
अज्ञानता से हमें तार दे मां ।
तू स्वर की देवी ये संगीत तुझसे
हर स्वर तेरा हर गीत तेरा
हम हैं अकेले हम हैं अधूरे
तेरी शरण हम, हमें प्यार दे मां ।
हे शारदे मां, हे शारदे मां,
अज्ञानता से हमें तार दे मां।

मुनियों ने समझी गुनियों ने जानी
वेदों की भाषा वेदों की वाणी ।
हम भी तो समझें, हम भी तो जानें
विद्या का हमको अधिकार दे मां ।
हे शारदे मां, हे शारदे मां,
अज्ञानता से हमें तार दे मां ।

तू श्वेतवर्णी कमल पर विराजे,
हाथों में वीणा मुकुट सिर पर साजे
मन से हमारे मिटा के अंधेरे
हमको उजालों का संसार दे मां ।
हे शारदे मां, हे शारदे मां,
अज्ञानता से हमें तार दे मां ।

# कैसा अद्‌भुत काम किया

चन्द्रयान की टीम ने देखो
कैसा अद्‌भुत काम किया
युगों युगों से सूत कातती
अम्मा का वंदन किया ।।

23 अगस्त 2023 की तारीख
को एतिहासिक बना दिया
चन्द्रयान की टीम ने देखो
कैसा अद्‌भुत काम किया ।।

देशों ने अपने झण्डे
पर चांद बनाया
मेरे देश ने चांद पर अपना झण्डा लहराया
सत्यमेव जयते, अशोक चिन्ह को रोवर प्रज्ञान के पहिये से
युगों - युगो तक अंकित कर दिखाया ।।

बचपन में कहानिया सुनते चंदा मामा की
आज उनसे मिलने जा पहुंचे है
मामा की गोद में खेल रहा प्रज्ञान
अंधेरे को सदा रोशन करने,
मेरे सँग चल दिया चाँद ।।

आज माथे पर मामा के तिलक किया और
उसकी धरती पर नमन किया ।।
चन्द्रयान की टीम ने देखो
कैसा अद्‌भुत काम किया ।।

कल्पना देवानी, क. अनुवाद अधिकारी

# सेवा निवृति

नियुक्ति के दिन से ही, निर्धारित हो जाता है
सेवा निवृति का दिन
अपने परिवार से अलग, कुछ और नाते-रिश्तों का बंधन,
मोह को छोड़ कर जाने का दिन
घर से ज़्यादा वक्त गुज़ारा इस ऑफिस में
खुशियां और गम साझा करने का बना सहारा.
अब समाप्त हो चली सुबह-शाम की भागम-भाग
ना अब बार-बार घड़ी पर नज़र जाएगी .
ना ट्रैफिक जाम की चिंता ना पंच करने की परवाह सताएगी .
जीवन में दौड़ते-दौड़ते, अजब ठहराव सा आ जाएगा,
दफ्तर की फाइलों को पढ़ने पर विराम सा लग जाएगा,
ये तो समय का प्रवाह है, जवानी में कार्यालय में
प्रवेश किया, परिपक्व होकर सीनियर सिटिज़न हो जाएंगें,
जीवन की यह पारी भी खेलेंगे
जैसे पहली पारी मुस्कुरा कर खेली, बाकी को भी
खिलखिला कर झेलेंगे ..

कल्पना देवानी, क. अनुवाद अधिकारी

# सेवानिवृत जीवन

जीवन के तेज़ रफ़्तार मे अचानक ठहराव आया
जब एक दिन नौकरी से सेवानिवृति का नोटिफिकेशन पाया

कल तक तो एक सफल अधिकारी था रातों रात बेकार कैसे हो गया
कुछ समय और नौकरी कर लेता तो किसी का क्या बिगड़ जाता

आने वाले दिनों को कैसे काटूंगा बिना नौकरी के कैसे जी पाऊगा
आने वाला जीवन लगा अंधकार, बिना नौकरी के क्या संसार

फिर कुछ दोस्तों से जब मिला उन्होंने प्यार से समझाया
नौकरी क्या जीवन भर तुम ही करोगे पीछे खड़े लोगों को चांस नहीं दोगे

सेवनिवृत्ति कोई जीवन मे पूर्णविराम नही है
यह तो केवल जीवन की दिशा में परिवर्तन है

कुछ समय अपने परिवार को दो, कुछ नए पुराने रिश्ते जोड़ो
सुबह जल्दी उठो और प्रकृति का आनंद लो, चहकती चिड़ियों की मधुर वाणी सुनो

घूम आओ हर वह जगह जहाँ नौकरी करते वंचित रहे
जीवन का क्या है आज है कल नहीं है

कुछ ऐसा कर जाओ लोग तुम्हे याद रखे
जाने के बाद भी अपनी सुगंध से वातावरण महका रहे

अमित मुखर्जी, कनसल्टेंट

# माँ

इक थपकी नींद ले आती है वो, जब भी लोरी गाती है,
चेहरे के भाव को देख के ही हर, बात समझ वो जाती है।
मेरी नादानी, मेरी शैतानी, मेरी तोतली बातें बचकानी
देख के मेरे बचपन में वो अक्सर, ही मुसकुराती हैं।
बिगड़े जरा सी हालत तो चिंता में, वो पड़ जाती है,
देखभाल में मेरी अक्सर सारी, रात जाग कर बिताती है।
इक थपकी नींद ले आती है वो, जब भी लोरी गाती है,
चेहरे के भाव को देख के ही हर, बात समझ वो जाती है।
खुद भूखी रह जाती है पर भूखा, न मुझे सुलाती है,
वो खाली पेट बसर कर मुझको, भर पेट खिलाती है।
हैरान हूँ मैं वो पढ़ी नहीं है अक्षरों, से कभी वो लड़ी नहीं है,
न जाने कैसा जादू है वो मेरी हर, धड़कन पढ़ जाती है।
इक थपकी नींद ले आती है वो, जब भी लोरी गाती है,
चेहरे के भाव को देख के ही हर, बात समझ वो जाती है।
वो तपती धूप में छाया है वो प्यार, की पावन माया है,
माँ की महिमा को खुद भगवान, ने भी गाई है।
उसके आशीर्वाद से ही हर दुख, तकलीफ मिट जाती है,
"माँ" की मौजूदगी से ही तो घर में, खुशियाँ आती हैं,
इक थपकी नींद ले आती है वो, जब भी लोरी गाती है,
चेहरे के भाव को देख के ही हर, बात समझ वो जाती है।

अलका धीर, निजी सचिव

# दिल को छू लेने वाली बात

एक दिन हम जुदा हो जाएंगे, न जाने कहाँ खो जाएंगे
तुम लाख पुकारोगे हमको, पर लौट कर हम  न आएंगे
थक हार के दिन के कामों से, जब रात को सोने जाओगे
जब देखोगे अपने फोन को, पैगाम मेरा न पाओगे
तब याद तुम्हें हम आएंगे, पर लौट के न आ पाएंगे
इक रोज़ ये रिश्ता छूटेगा, फिर कोई न हम से रूठेगा
पर हम न आंखे खोलेंगे, तुम से कभी न बोलेंगे
आखिर उस दिन तुम रो दोगे, ऐ दोस्त मुझे तुम खो दोगे
कद्र करनी है तो जीते जी करें, मरने के बाद तो पराये भी रो देते हैं
आज जिस्म में जान है तो, देखते नहीं हैं लोग
जब रूह निकाल जाएगी तो, कफन हटा हटा कर देखेंगे

**किसी ने क्या खूब लिखा है:-**

वक्त निकालकर बातें कर लिया करो अपनो से
अगर अपने ही न रहेंगे, तो वक्त का क्या करोगे
गुरूर किस बात का साहिब आज “मिट्टी” के उपर
तो कल “मिट्टी” के नीचे ।

**अलका धीर, निजी सचिव**

# ये आधुनिक शहर दिल्ली है जनाब

लेकिन अब कितनी अजीब हो गई है

यहां फटी जींस वाला अमीर है और सूती कुर्ते वाला गरीब है ।

यहां तारीफ करते शरमाते हैं, लेकिन आलोचना करते बेबाक हैं ।

यहां गाली में मां बहन का नाम है, लेकिन मदर्स डे हर साल मनाते है ।

यहां लोगो को गांव पसंद नहीं है, लेकिन ताजी हवा को तलाशते हैं ।

यहां रिश्वत ऑफिस में लेते हैं, लेकिन बाहर एन.जी.ओ. चलाते हैं ।

यहां कचरा खूब फैलाते हैं लेकिन उठाना सरकार की ज़िम्मेदारी बताते हैं ।

यहां झूठ, चमचागिरी कर इंसान तरक्की पा आगे बढ जाते हैं ।

लेकिन सत्य और ईमानदारी की गाथा गाते हैं ।

सोच बदलो सितारे बदल जायेंगे ।

देखने का नज़रिया बदलो नज़ारे बदल जायेंगे ।

कश्ती बदलने की ज़रूरत नहीं दिशा बदलो किनारे बदल जायेंगे ।

**मंजु अंजलि, वास्तुक सहायक**

# यात्रा वृतांत - "उदयपुर"

उदयपुर को "झीलों की नगरी" भी कहा जाता है । नगर के चारों ओर झीले ही झीले हैं : पिछोला, स्वरूप सागर, फतहसागर, उदयसागर, दूधतलाई, जनसागर आदि झीले हैं । राजस्थान में स्थित यह शहर नि:संदेह ही बहुत ही मनमोहक है ।

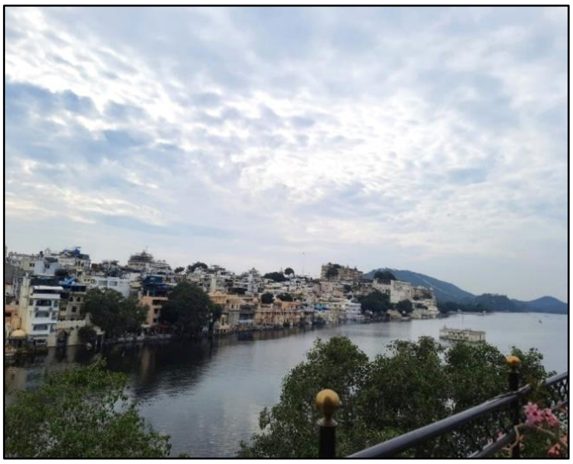

**(पिछोला झील का होटल की छत से लिया गया दृश्य)**

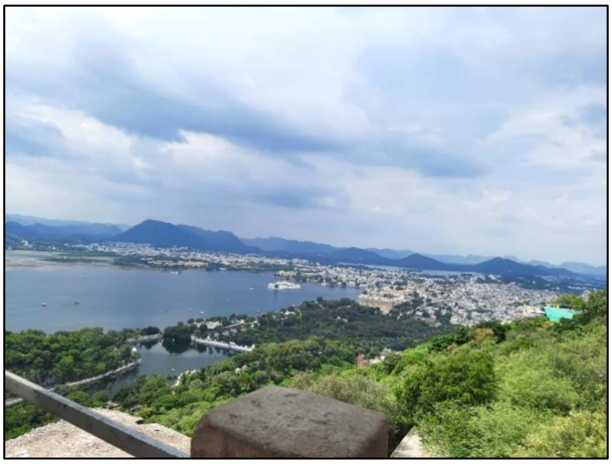

**(उदयपुर का करनी माता मंदिर से लिया गया दृश्य)**

दिल्ली से शाम मेवाड़ एक्सप्रेस ट्रेन पकड़ के हम सुबह 7 बजे उदयपुर पहुँच गए। होटल में चेक इन कर के तैयार होकर हमने अपना पहला दिन शुरू किया, क्यूंकि इस दिन श्री कृष्ण जनमाष्टमी थी तो सर्वप्रथम हम पहुंचे "जगदीश मंदिर" । दर्शन करके बड़ा ही अच्छा अनुभव हुआ। यह मंदिर सिटी पैलेस के बिल्कुल पास ही है। चौराहे पर दही हांडी के कार्यक्रम की तैयारी एवं सजावट चल रही थी जो कि रात को 12 बजे होना था। तद्पश्चात हमने स्कूटी किराए पर ली और निकाल पड़े "करनी माता मंदिर" के रोपेवे की तरफ़। रोपवे का टिकट ले कर, थोड़ी देर प्रतीक्षा करके हमारी बारी आयी। रोपेवे से ऊपर से पूरा उदयपुर एक बार मे बहुत ही सुंदर दिखता है। यह मंदिर शहर की शोभा को और भी बढ़ाता है।

शाम को सूर्यास्त के समय गणगौर घाट पर बैठ कर समय बिताया । इसके बिलकुल पास ही है "बागोर की हवेली" जोकि एक आकर्षक पर्यटन स्थल है । इसमें शाम के समय एक लोक-गीत एवं नृत्य कार्यक्रम भी होता हैं जोकि अवश्य ही देखने योग्य है । हमारे पहले दिन का अंत लेक साइड कैंडल डिनर करके हुआ ।

अगले दिन प्रात: ही हम “झील कैफे” में नाश्ता करके सीधे पहुँच गए “सिटि पैलेस” जोकि उदयपुर की शान है। इसको राजा उदय सिंह ने निर्णय लिया था । इसकी वास्तुकला में कई राजाओं का योगदान दिखता है । बहुत ही सुंदर महल के कुछ हिस्से को संग्रालय की तरह प्रयोग होता है और कुछ हिस्से में राजपरिवार निवास करता है। इस महल को देखने के दौरान गाइड अवश्य ही लेना चाहिए क्यूकी बिना गाइड के कुछ ज्यादा समझ नहीं आयेगा । गाइड हर क्षेत्र का संछिप्त विवरण देगा तो रुचि बनी रहेगी । सिटि पैलेस घूमने में कम से कम 3-4 घंटे लगेंगे ।

इसके बाद हम निकले “मॉनसून पैलेस” जिसको “सज्जन गढ़ पैलेस” भी कहा जाता है। रास्ते मे बारिश होने के कारण मौसम बहुत ही सुहावना हो गया । इसे सिसोदिया महाराणा सज्जन सिंह जी ने 19वीं शताब्दी में बनवाया था। बांसडारा पर्वत पर स्थित होने के कारण इससे सूर्योदय एवं सूर्यास्त बहुत ही मनमोहक दिखता है । और उदयपुर शहर का इतनी ऊँचाई से दृश्य देख कर कोई नहीं कह सकता की यह राजस्थान है । वापस आकार हमने रात को खरीददारी की जिसमें बांधेज और लहरिया की साड़ी और राजपूती पोशाक ख़ास थे ।

तीसरे दिन हम निकले उदयपुर से थोड़ा बाहर “कैलाशपुरी”, यहाँ पर शिवजी का प्रसिद्ध “एक लिंगजी” मंदिर है। वास्तुकला के नज़रिये से ये बहुत ही भव्य मंदिर है। इसके बाद हम गए “नाथद्वारा” जहां पर शिवजी की 350 फ़ीट ऊंची प्रतिमा है । इसको विश्वास-स्वरूपम या स्टैच्यू ऑफ बेलीफ़ भी कहा जाता है।

अगले दिन प्रताप गौरव केंद्र गए जोकि महाराणा प्रताप को समर्पित है। फतेह सागर झील देखते हुए थोड़ा समय अंबरई घाट पर व्यतीत किया । विंटेज कार म्यूज़ियम में कुछ पुराने समय की कारों का कलेक्शन देखा ।

**(मूनसून पैलेस से लिया गया उदयपुर शहर का दृश्य)**

उदयपुर यात्रा एक अच्छा अनुभव रहा। दफ़्तर की व्यस्त ज़िंदगी से कुछ समय निकाल कर सभी को नयी जगह का अनुभव ज़रूर करना ही चाहिए ।

**नेहा चौहान, वास्तुक सहायक**

# मेरी उज्जैन यात्रा

हाल ही में मुझे शिप्रा नदी के किनारे बसे उज्जैन जाने का अवसर मिला । उज्जैन की धरती महाकाल और अपने मंदिरो के लिए विख्यात है। यह शहर मध्य प्रदेश राज्य में स्थित है। भोपाल से १७३ कि. मी. दूर है तथा देश के सभी मुख्य शहरों से रेल और बस द्वारा जुड़ा हुआ है। चूंकि अभी दिल्ली में फॉग होने के कारण सभी रेल देरी से चल रही थी। हमने यानि मेरे साथ मेरे परिवार के सदस्य, कुल मिलाकर हम सभी 9 लोग थे । दिनांक 1 फरवरी 2024 को निज़ामुद्दीन रेल्वे स्टेशन से अपनी यात्रा आरंभ की। ट्रेन 2 घंटे देरी से चल रही थी, परंतु महाकाल जाने के उत्साह में यह 2 घंटो का पता ही नहीं चला की, कब हमारी ट्रेन आ गई, हमे उज्जैन से 1 स्टेशन पहले नागदा तक का कन्फ़र्म टिकिट मिला था, तो अगले दिन सुबह करीब 10.30 बजे नागदा पहुँच गये और हमने उसी स्टेशन से उज्जैन के लिए इंटर-सिटि ट्रेन मिल गयी जिसने हमे वहाँ 1 घंटे में उज्जैन पहुंचा दिया। उज्जैन में ही हमने पहले से बुक किया हुआ गेस्ट हाउस मिल गया। स्टेशन से रेलगाडी से उतरते है, चारों ओर महाकाल की जय जयकार सुनाई दी जिससे हमारी थकान दूर हो गयी । उज्जैन घूमने के लिए कम से कम यात्रियों को 2-3 दिन का समय चाहिए।

हम सभी ने गेस्ट हाउस में कुछ आराम किया और तैयार होके महाकाल के दर्शन के लिए चले गये। मंदिर पहुँच कर पता चला की यहाँ वीआईपी और सामान्य दर्शनों के पैसे लिए जाते है हमने भी वहाँ से वीआईपी पर्ची कटाकर अंदर चले गये तो हमे महाकाल ज्योतिर्लिंग के पास से दर्शन हो गये । बाहर निकालकर हमने कुछ खाया पिया और वही से बैटरी ऑटो करके उज्जैन से और मंदिरो के लिए चले गये ।

सर्वप्रथम हमने महाभारत कालीन गड़कालिका मंदिर के दर्शन किए। यह मंदिर को 51 शक्ति पीठों में गिना जाता है। यहाँ माता सती की कोहनी गिरी थी। मंदिर में स्थित माता की प्रतिमा अत्यंत मनमोहक तथा प्रसन्न मुद्रा में है। उसके बाद हमने प्रथम पूजनीय चिंतामन गणेश मंदिर के दर्शन किए। उज्जैन के लोग सब मांगलिक कार्यों का शुभारम्भ चिंतामन गणेश के मंदिर से ही करते है। लोग यहाँ मन्नत के धागे बांधते है तथा मनोकामना पूर्ण होने पर फिर से यहाँ दर्शन करने आते है और पूजा करते है। उसी क्रम में काल भैरव मंदिर के दर्शन किए । आठ भैरवो में

से एक काल भैरव के रूप में शिव इस प्राचीन मंदिर में शोभायमान है। इस मंदिर में स्थापित काल भैरव की प्रतिमा को मदिरा का प्रसाद चढ़ाया जाता है। ऐसा कहा जाता है की महाकाल के दर्शन कर के यदि कोई काल भैरव के दर्शन न करे तो उसकी उज्जैन की यात्रा अधूरी रह जाती है। उसके बाद हम सभी ने मंगलनाथ मंदिर के दर्शन किए, भगवान शंकर के अंश से मंगल गृह का जनम इसी स्थान पर हुआ था। कर्क रेखा इसी मंदिर से हो कर जाती है। मंगल गृह का मनुष्य जीवन पर बहुत असर होता है। मंगल गृह की शांति के लिए यहाँ विशेष पूजा होती है। यह मंदिर अति प्राचीन है। यहाँ दर्शन कर श्रद्धालु अपने कष्टों से मुक्ति पाते है तथा मंगलमय भविष्य की कामना करते है। प्राचीन उज्जैन अपने राजनीतिक और धार्मिक महत्व के अलावा, महाभारत काल की शुरुआत में शिक्षा का प्रतिष्ठित केंद्र था | भगवान श्री कृष्ण और सुदामा ने गुरु सांदीपनि के आश्रम में नियमित रूप से शिक्षा प्राप्त की थी। महर्षि सांदीपनि का आश्रम मंगलनाथ रोड पर स्थित हे | इतना मंदिर घूमने के बाद हम सब वापस गेस्ट हाउस आ गये । हम सभी अगले दिन ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग जाने का निर्णय किया । महाकाल मंदिर के पास से हमने अपनी कैब बुक कर ली ।

अगले दिन हमने प्रात: सात बजे ओंकारेश्वर जाने के लिए निकल पड़े उज्जैन से ओंकारेश्वर 150 किलोमीटर दूर है वहाँ जाने के लिए करीब हमे चार घंटे का समय लगा । ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में नर्मदा नदी के किनारे मंधाता पर्वत पर स्थित है । यह भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंग में से एक है। यह द्वीप हिन्दू पवित्र चिन्ह ॐ के आकार में बना हुआ है यहाँ दो मंदिर है ओंकारेश्वर एवं ममलेश्वर के रूप में पूजा जाता है। यह ज्योतिर्लिंग प्रकृतिक शिवलिंग है इसके चारों और हमेशा पानी भरा रहता है । मंदिर तक जाने के लिए नाव के द्वारा ही जाया जाता है तथा पैदल मार्ग भी 1 से डेढ़ किलोमीटर लंबा है हम सभी भी नाव द्वारा वहाँ तक गये चूंकि उस दिन शनिवार था और मंदिर में लाइन बहुत लंबी थी । लाइन में लगते हुए वहाँ आरती का समय हो गया और मंदिर कुछ टाइम के लिए बंद हो गया। आरती होने के बाद हम सभी ने ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन किए इसमे करीब चार घंटे लग गये फिर हम सभी ने ममलेश्वर मंदिर के दर्शन किए। मंदिर से कुछ दूर जाने के बाद हमने एक होटल में लंच किया और हम सब वापिस उज्जैन आ गये । उज्जैन पहुचते रात हो गयी फिर हमने गेस्ट हाउस आके कुछ विश्राम किया, फिर रात दो बजे भस्म आरती में जाने के लिए मंदिर की लाइन में लग गए ।

महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग में सुबह की भस्म आरती, जिसका तांत्रिक विधाओं में इसका विशेष महत्व है। यहाँ सुबह की भस्म आरती, भगवान शिव शंकर को उठाने की ऐसी आरती है जिसमे भगवान का श्रृंगार भस्म से किया जाता है। भस्म आरती में हिस्सा लेने के लिए पुरुषो को धोती तथा महिलाओं को साड़ी पहनना अनिवार्य है। यहाँ सुबह की आरती के लिए पर्ची सिस्टम बना हुआ है, हमे भी किसी सज्जन व्यक्ति द्वारा वीवीआईपी पर्ची मिल गयी जिससे हम सभी ने

गर्भग्रह में बैठकर आरती का मनोरम आनंद उठाया । इस आरती में शामिल होने के लिए कुछ नियमो का पालन करना अनिवार्य है। मंदिर प्रांगण में अन्य कई देवी देवताओं के मंदिर भी सुशोभित है।

यहाँ कुछ वक्त बिताने के बाद हम सभी पास ही प्रसिद सिद्धवट मन्दिर के लिए चले गये। जिस प्रकार प्रयाग' में 'अक्षयवट' हैं, नासिक में पंचवट हैं, 'वृंदावन' में वंशीवट हैं तथा गया में 'गयावट' हैं, उसी प्रकार उज्जैन में पवित्र 'सिद्धवट' हैं। कर्मकाण्ड, मोक्ष कर्म, पिण्डदान, कालसर्प शांति एवं अंत्येष्टि के लिए प्रमुख स्थान माना जाता हैं। हमने भी वहाँ पूजा अर्चना की और हम सभी वापिस गेस्ट हाउस आ गये । वापस आके हमने अपना सामान पैक किया चूंकि हमारी ट्रेन का समय हो रहा था हम वहाँ से करीब 1 बजे वापिस उज्जैन स्टेशन आ गये। इस बार भी हमारी ट्रेन 15 मिनट लेट थी और हम सभी दिनांक 5 फरवरी 2024 के सुबह को वापस निज़ामुद्दीन स्टेशन आ गए ।

**रवीद्र कुमार, वरिष्ठ अशुलिपिक**

# माँ

माँ शब्द अपने आप में बहुत छोटा शब्द है
पर इस माँ में सारा जहां समाया है ।
इस संसार में सबका पहला गुरू उसकी माँ होती है
चाहे पढ़ना लिखना आता है या नहीं,
पर बच्चों को अच्छे संस्कार देती है माँ ।

धरती पर माँ बाप से बढ़कर कोई नहीं
माँ है तो जहां है उसके बिना कुछ नहीं
माँ का प्यार अनमोल है, उसका कोई मोल नहीं ।

मेरे दुख सारे समेट जाती, सुख की ममता बिखेर जाती
वो है मेरी माँ, सारे सुख मुझ पे लुटाती, वो है मेरी माँ,
अपने आप को दुख देकर भी जो खुशियाँ लाती, वो है मेरी माँ ।

घुटनों से चलते-चलते कब पैरों पर खड़ी हुई,
लाड़ प्यार से चलना सिखाया, बैठना सिखाया
माँ की ममता से कब बड़ी हो गई समझ नहीं आया ।

कब माँ ने दुखों और सुखों से लड़ना सिखाया,
कब जिन्दगी का पाठ पढ़ाया हमें जीना सिखाया
वो माँ है, जो हमें सब कुछ सिखा कर भी अज्ञानी कहलाती है ।

माँ चाहे पास हो या दूर उसका प्यार कम नहीं होता
जिसमें केवल स्नेह नजर आता है वो है माँ
माँ मर कर भी कभी नहीं मरती, माँ तो अमर है,
माँ के संस्कार है जो हमें हमेशा रास्ता दिखाते हैं
उन रास्तों पे चलना ही हकीकत में माँ का ही आशीर्वाद है ।

**सुनीता रानी, सहायक**

# क्या प्रसन्नता प्राप्ति वास्तव में इस योग्य है ?

हम प्रत्येक दिन जो कुछ भी करते हैं वह आनंद प्राप्ति के उद्देश्य से होता है? मेरा मानना है कि यह कुल मात्रा का आंशिक भाग है । तो हम अपने रोजमर्रा के जीवन में खुशियाँ कैसे लाएँ? मैं कहूँगी कि, मैं अपने दिन को हिस्सों में बाँटना चाहूँगी और उसमें कुछ ऐसा करना चाहूँगी जोकि मुझे केवल आनंद दें । पुरानी कहावत है :

***"काम ही काम, न कोई मौज न आराम, फिर कैसे चमके चिपटू राम"***

अब प्रसन्नता एक बहुत ही व्यक्तिपरक शब्द है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग स्तर पर होती है । मेरे लिए, घोंघे को रास्ता काटते हुए देखना जैसी छोटी सी बात मुझे खुशी देती या मैं कहूंगी कि प्रकृति के साथ जुड़ने से मुझे खुशी मिलती है (जो लोग मेरे करीबी हैं वे जानते हैं कि मैं प्रकृति प्रेमी हूं और प्रकृति को नैर्गसिक रूप में पसंद करती हूं)। तो ऐसा क्यों है कि मैं इस शब्द - आनंद - पर अधिक जोर दे रही हूँ?

जब हम प्रसन्नता का पैमाइश करते हैं तो खुशी और कार्य के बीच की रेखा धुंधली होने लगती है। हम इसे कैसे मापें?

हम सोचने लगते हैं कि क्या यह कार्य करने लायक है, क्योंकि इससे कोई लाभ नहीं मिल रहा है या हमारा ध्यान आकर्षित करने लायक नहीं है । और फिर शुरू होता है दुष्चक्र जब अक्सर हम कार्य को मात्र इसलिए छोड़ देते हैं क्योंकि यह देने से जुड़ा नहीं होता है ।

लेकिन प्रसन्नता, शुद्ध आनंद और लेने के बारे में नहीं होती?

हम अपने ही बुने जाल में उलझ गए हैं, जहां हम उस समय और पैसे की तलाश में कड़ी मेहनत करते हैं जोकि हमें खुशी दे, किंतु जब हम उस खुशी का आनंद लेना चाहते हैं तो हम नहीं ले पाते, क्योंकि जब हम उसका पीछा कर रहे होते हैं तो हमारी परिभाषा बदल जाती है ।

तो आइए थोड़ा आहिस्ता तसल्ली से, उस आनंद को खोजने और संतुष्टि के लिए इस जाल को सुलझाने का प्रयास करें जिसके लिए हम वास्तव में तरसते हैं!

**पारुल कपूर**

*"ख़ुशी अक्सर अज्ञात स्थानों में छिपी होती है, और उसे जिज्ञासु और असंसाधित इरादों के साथ तलाशने की आवश्यकता होती है। एक बार जब हम ख़ुशी जैसी शुद्ध और सच्ची भावना के परिप्रेक्ष्य में देंखे, तो यह केवल समाप्त होने की प्रतीक्षा करने वाला कार्य बनकर रह जाता है। "*

**इतनी बड़ी दुनिया में कौन किस कारण से खुश और प्रसन्न होता है, यह उसके ऊपर निर्भर करता है। कुछ लोग खुशी का संबंध पैसों से जोड़ते हैं, लेकिन यह सिद्धांत गलत है। क्योंकि इस दुनिया में सबसे ज्यादा चिंतित रहने वाले लोगों में अमीर लोग भी होते हैं, क्योंकि उन्हें हर समय कोई ना कोई डर सताता ही रहता है। वहीं दूसरी ओर एक गरीब व्यक्ति भले ही दूसरे परिपेक्ष्य में तमाम अभावों से निराश भले होता है, लेकिन वह अमीरों की तुलना में एक संतुष्ट नींद सो पाता है।**

# संविधान दिवस

संविधान दिवस हर साल 26 नवंबर को मनाया जाता है। इसकी मुख्य ये है कि 26 नवंबर 1949 में भारतीय संविधान सभा की ओर से संविधान को अंगीकार किया गया था। संविधान दिवस मनाने की परंपरा की शुरुआत साल 2015 से की गई।

Constitution Day हमारे देश का संविधान कई सिद्धांतों को समेटे है जिनके आधार पर देश की सरकार और नागरिकों के लिए मौलिक राजनीतिक सिद्धांत प्रक्रियाएं अधिकार दिशा-निर्देश कानून वगैरह तय किए गए हैं। 26 नवंबर 1949 में भारतीय संविधान सभा की ओर से संविधान को अंगीकार किया गया था। संविधान दिवस मनाने की परंपरा की शुरुआत साल 2015 से की गई। डॉ. भीमराव अंबेडकर को श्रद्धांजलि देने के लिए संविधान दिवस को मनाने का फैसला लिया गया था।

हमारे प्यारे देश भारत में हर साल 26 नवंबर के दिन संविधान दिवस मनाया जाता है। इस दिन सरकारी दफ्तरों, स्कूलों एवं कॉलेजों में कार्यक्रम, स्पीच, क्विज, आदि का आयोजन किया जाता है।

26 नवंबर 1949 को संविधान को अंगीकार किए जाने के बाद देश में इसे लागू करने में कुछ महीने का वक्त लगा। 26 जनवरी 1950 को संविधान पूरी तरह से लागू कर दिया गया। इसलिए इस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में देशभर में धूमधाम से मनाया जाता है।

## महत्व

भारत का संविधान कई सिद्धांतों को समेटे है, जिनके आधार पर देश की सरकार और नागरिकों के लिए मौलिक, राजनीतिक सिद्धांत, प्रक्रियाएं, अधिकार, दिशा-निर्देश, कानून वगैरह तय किए गए हैं।

**26.11.2023 (रविवार) होने के कारण 24.11.23 को संविधान दिवस पर शपथ ली गई**

# वन्दे भारत

**भारत में सबसे पहली वन्दे भारत ट्रेन 15 फरवरी, 2019 को चलाई गई थी। जिसका ट्रायल वाराणसी से दिल्ली के बीच किया गया था। इस ट्रेन के नेटवर्क का लगातार विस्तार हो रहा है।**

1. ये ट्रेन पूरी तरह यानी 100 फीसदी स्वदेशी है।
2. इसकी रफ़्तार बहुत ही कम समय में 160 किलोमीटर प्रति घंटे से बढ़कर 200 किलोमीटर प्रति घंटे हो जाती है।
3. भारत की ट्रेनों में इंजन का एक अलग से कोच होता है, लेकिन वन्दे भारत ट्रेन में एकीकृत इंजन होता है।
4. ट्रेन 100 किलोमीटर की स्पीड बस 52 सेंकड में पकड़ लेती है।
5. ट्रेन में ऑटोमेटिक दरवाजे लगे हैं। मेट्रो के जैसे ही ये दरवाजे ही ऑटोमेटिक खुलते हैं। साथ ही कई आधुनिक सुविधाओं से ट्रेन लैस है।
6. सभी कोच वतानुकुलिन है।
7. इसमें जो स्टिंग चेयर्स है वो 360 डिग्री घूम जाती हैं।
8. इस ट्रेन में भोजन और नाश्ता भी परोसा जाता है, जिसकी कीमत टिकट में ही शामिल होती है।
9. यात्रियों की सुविधा का ध्यान रखते हुए ट्रेन को पूरी तरह से ऑनबोर्ड वाईफाई की सुविधा से लैस बनाया है। साथ ही हर सीट के नीचे मोबाइल और लैपटॉप चार्ज करने के लिए चार्जिंग पॉइंट्स दिए गए हैं।
10. वन्दे भारत ट्रेन में जीपीएस प्रणाली लगी है। जिसके माध्यम से आने वाले स्टेशन और अन्य सूचनाओं की जानकारी मिलती है।
11. स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए ट्रेन में बायो वैक्यूम शौचालय का निर्माण किया गया है, जैसे हवाई जहाजों में इस्तेमाल होते हैं।
12. ट्रेन से बाहर का नजारा अच्छे से दिखाई दे इसीलिए बड़े से ग्लास लगाए गए हैं।
13. यात्रियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए हर डिब्बे में सीसीटीवी लगाए गए हैं।
14. यात्रियों की सेफ्टी को ध्यान में रखते हुए जब ट्रेन पूरी तरह से रूक जाती है तब ही दरवाजे खुलेंगे, ताकि यात्री चलती ट्रेन में न ही चढ़े और न ही उतरे।
15. वन्दे भारत ट्रेन को बनाने में दिव्यागों का भी ध्यान रखा गया है। ट्रेन के कुछ डिब्बों में व्हीलचेयर रखने के लिए अलग से स्थान बनाया गया है।

इस साल कुल 34 वंदे भारत ट्रेन लॉन्च की गई है। 13 दिसंबर, 2023 तक तक देश में 34 वंदे मेट्रो ट्रेन लॉन्च हो चुकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी (Narendra Modi) ने देश में पहली वंदे भारत ट्रेन को 15 फरवरी, 2019 को हरी झंडी दिखाई थी।

**आकाश, वास्तुक सहायक**

# आयोग की पत्रिका का विमोचन

अधिकारिक भाषा के उपयोग को प्रोत्साहित करने और कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करने की दृष्टि से, दिल्ली नगर कला आयोग ने 'कलाकृति' शीर्षक से जनवरी माह 2024 को पत्रिका का विमोचन किया । इस अवधि का अंक-7 (अक्तूबर से मार्च) आयोग द्वारा जारी किया गया । इस वर्ष से अर्धवार्षिक पत्रिका (2023-24) जारी की गई । पत्रिका में आयोग की विभिन्न गतिविधियों, समय-समय पर आयोजित बैठकों, कार्यशालाओं और राजभाषा माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं का संकलन है एवं सचित्र यात्रा संस्मरण भी शामिल किए गए हैं। तकनीकी लेख भी समाहित हैं जोकि आयोग के तकनीकी प्रस्तावों पर आधारित हैं । राजभाषा सम्बंधी ज्ञानवर्धक सूचनाएं भी समाहित की गई हैं । पत्रिका को, आयोग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के कलाकार बच्चों ने चित्रकारी तथा कला-कार्य को छुपे रुस्तम शीर्षक के अतंर्गत सुशोभित किया है ।

# दिल्ली नगर कला आयोग की राजभाषा कार्यांवयन समिति की बैठक

दिल्ली नगर कला आयोग की राजभाषा कार्यांवयन समिति की बैठक का आयोजन दि. 15.12.23 को किया गया । बैठक में निम्नलिखित सदस्यों ने भाग लिया ।

| | | |
|---|---|---|
| 1. | श्रीमती रुबी कौशल | सचिव, दि.न.क.आ., अध्यक्ष, रा.का.स. |
| 2. | श्री राजीव कुमार गौड़ | सहायक सचिव (तकनीकी), दि.न.क.आ., सदस्य सचिव, रा.का.स. |
| 3. | श्रीमती अलका धीर | निजी सचिव, सदस्य, रा.का.स. |
| 4. | श्रीमती मंजु अंजलि | वास्तुक सहायक, सदस्य, रा.का.स. |
| 5. | श्रीमती कल्पना देवानी | क. अनुवाद अधिकारी, दि.न.क.आ., सदस्य, रा.का.स. |

# कार्यशाला आयोजन

15.12.23 को कार्यालयों की 'राजभाषा कार्यान्वयन और प्रचार-प्रसार में हिंदी कार्यशालाओं की भूमिका' पर कार्यशाला आयोजन किया गया ।

श्री राजबीर, सचिव, नगर राजभाषा कार्यांवयन समिति ने कार्यशाला में राजभाषा सम्बंधी नियमों, मंत्रालय से समय-समय पर प्राप्त आदेशों, वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित पत्राचार सम्बंधी लक्ष्यों, कार्यालय द्वारा जारी पत्रिका और प्रोत्साहन सम्बंधी योजनाओं के विषय में व्यापक रुप में बताया । कार्यशाला कार्मिकों के लिए लाभदायक और ज्ञानवर्धक रही । राजभाषा के प्रचार-प्रसार में यह एक प्रशंसनीय प्रयास रहा । विभिन्न राजभाषा सम्बंधी वीडियोज़ के माध्यम से कार्यशाला रोचक और ज्ञानवर्धक रही ।

# तीसरा आदमी

लघुकथा

गांव से मुख्यमार्ग की ओर एक छोटी सी सड़क जाती थी । जिसके दोनों ओर आम, नीम, जामुन, पीपल, शीशम आदि के पेड़ लगे हुए थे । शीशम के पेड़ की सूखी लकडी टूटकर बीच सड़क पर गिरी । लकडी ज्यादा मोटी और बडी भी नहीं थी लेकिन उसका आकार इतना तो था, जिससे रास्ता अवरुद्ध हो सके । उसे पैदल तो आसानी से पार किया जा सकता था । लेकिन साइकिल या मोटर साइकिल से दाएं -बाएं होकर निकलना पड़ता । मुश्किल तेज़ गति से आने वाले के लिए या रात में कोई पैदल भी जाता तो उसमें फंसकर गिर सकता था ।

शाम का वक्त था और आने-जाने वालों की संख्यां बेहद कम, कुछ  देर बाद पहला आदमी उस ओर से गुज़रा । उसने बगल के खेतवाले को जो थोडी दूर निराई कर रहा था, उसे आवाज़ देकर कहा “भैया ! लकड़ी टूटकर गिरी है, जाते समय उठाकर ले जाना ।”

कुछ और देर बाद दूसरा आदमी भी गुज़रा ,उसने लकड़ी को पड़ा देखा तो कहने लगा “कैसे -कैसे आदमी हैं ,बीच रास्ते में इतनी बड़ी लकड़ी पडी है लेकिन कोई हटाएगा नही ,लोग मोटरसाइकिल ले भर्र से आएंगें , लेकिन इतना भी नहीं है कि एक लात मार दें और यह साइड हो जाए । पड़ी रहन दो ,जब तक दो -चार  गिरेंगे नहीं तब तक अक्ल कहां से आएगी ।“

इसके बाद एक तीसरा आदमी भी उधर से गुज़रा, उसने चुपचाप से लकड़ी उठाई और उसे किनारे करते हुए चला गया ।

इस देश को सबसे ज़्यादा ज़रूरत इस तीसरे आदमी की ही है ।

सौजन्य: दिवाकर पाण्डे, साहित्य अमृत

# पहुंच से परे

मणि के यहां पोते-पोतियों का जन्म हुआ तो लगा आसमान से चांद-सितारे, जो पहुंच से दूर थे, बहुत दूर, अचानक से आंगन में उतर आए हैं । उसे याद आने लगे थे लोग जो 'अकेले' रह रहे हैं या वृदाश्रमों की शरण ले चुके हैं । अवश्य ही उनसे कोई चूक हुई होगी । कभी-न-कभी उनके व्यवहार से कोई चोट अवश्य पहुंची होगी ।

नहीं ! नहीं! मेरे साथ ऐसा कुछ नहीं होगा । ये ना तो मुझसे दूर जा सकते हैं । न मैं इनसे ।

छुटके-छुटकियां बढ़ने और समझदार होने लगे । इस कल्पना से निहारकर मणि ने एक-एक कर पोते-पोतियों को सीने से इस तरह चिपका लिया कि कोई छीन न ले जाए ।

मौसम बीतते गए दृश्य परिवर्तित होना शुरु हुआ ।

जिस मणि को अपने और उनके बीच सेंटीमीटर की दूरी भी असहय थी, वो धीरे-धीरे अपने कमरों में कैद होने लगे थे । उनके बारे में अगर कुछ जानना हो, उनसे कुछ बतियाना हो तो वे नहीं उनकी मां सामने आती, उनके पास बचाव के कई हथियार रहते । जैसे वह वाशरुम में है । सो रहे हैं । कॉल पर हैं ।

पर कभी ऐसी सांत्वना न मिली, उन्हे कह दूंगी ।

दादी से बच्चों को दूर रखने के ऐसे कई विकल्प उन्होने ढूंढ लिये थे । भले ही वे पढाई न कर रहे हों, सो न रहे हों । लेटे-लेटे मोबाइल व ईयरफोन लगा कर मग्न हों ।

उसके आगे दुनिया की एक बदली हुई तस्वीर थी । अब आदत डालनी होगी एकाकी रहने की । चांद सितारे अपनी मूल जगह लौट चुके थे । मणि की आंखो में छाई घटाओं के कारण धुंधले और धुंधले उसकी पहुंच से दूर बहुत दूर जा चुके थे ।

सौजन्य : कोमल वाधवानी साहित्य अमृत

# छुपे रुस्तम कलाकार

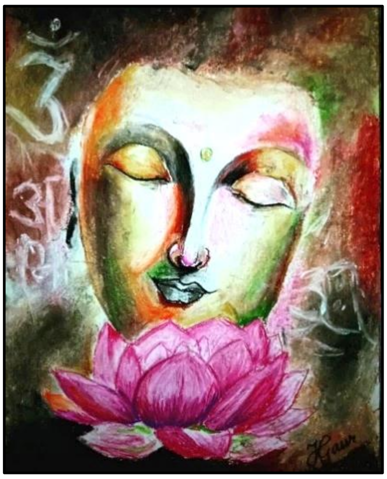

**तनुष गौड़, पुत्र श्री राजीव कुमार गौड़, सहायक सचिव (तकनीकी)**

**सुरभि देवानी, सुपुत्री श्रीमती कल्पना देवानी, क. अनुवाद अधिकारी**

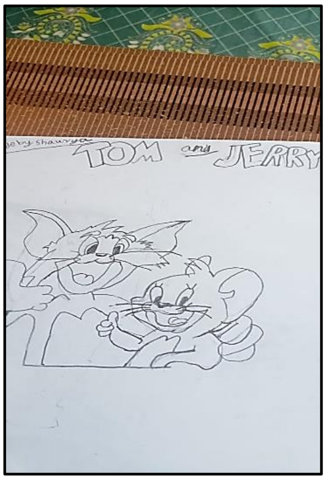

**शौर्य सागर, सुपुत्र श्री सिद्धार्थ सागर, वास्तुक सहायक**

**देवांश बन्दूणी, पुत्र श्री दीपक चन्द्र बन्दूणी, उच्च श्रेणी लिपिक**

**तान्या, अवर श्रेणी लिपिक**

**दिव्यांश, शिक्षा (एम.टी.एस.) का पोता**

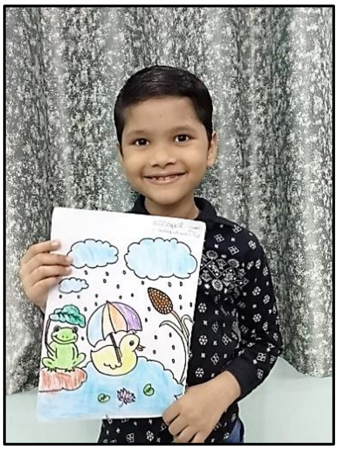

# राजभाषा, अनुच्छेद तथा प्रावधान

संविधान सभा में राजभाषा पर तीन दिन की लंबी बहस के बाद 14 सितंबर, 1949 को संविधान ने हिन्दी को सर्वसम्मति से राजभाषा का दर्जा दिया था । हमारे संविधान में भाग 17 के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा को लेकर विशेष प्रावधान हैं ।

## अनुच्छेद 343

343 (1) - इस अनुच्छेद में कहा गया है कि भारत संघ की भाषा देवनागरी लिपी में हिन्दी होगी । संघ के सरकारी कायों में भारतीय अंकों के अंतराष्ट्रीय रूपों का प्रयोग होगा ।

343(2) - इसमें कहा गया है कि संविधान लागू होने के 15 सालों तरक यानी 26 जनवरी 1950 से 26 जिवरी 1965 तक अंग्रेजी भाषा सरकारी कार्यो में पहले की तरह इस्तेमाल होती रहेगी ।

## अनुच्छेद 344

इस अनुच्छेद में राजभाषा आयोग के गठन की बात कही गई है... इसमें कहा गया है कि संविधान के प्रारंभ से 5 और 10 वर्षों के खत्म होने पर देश के राष्ट्रपति हिन्दी के विकास और प्रयोग का जायजा लेने के लिए आयोग का गठन करेंगे । आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए 30 सदस्यों की संसदीय समीति गठित की जाएगी । इसमें लोकसभा के 20 और राज्यसभा के 10 सदस्य होंगे. समिति रिपोर्ट राष्ट्रपति को सौंपेगी ।

## अनुच्छेद-345

इस अनुच्छेद में राज्यों की राजभाषाओं का जिक्र है । इसमें कहा गया है कि राज्यों के विधान मंडल अपने राज्य में सरकारी प्रयोजन के स्थानीय भाषा/भाषाओं या हिन्दी को अपनाएंगे । जब तक कानून द्वारा कोई प्रबंध नहीं किया जाता राज्य में अंग्रेजी पहले की तरह सरकारी कामों में प्रयोग होती रहेगी ।

## अनुच्छेद 346

इस अनुच्छेद में केंद्र और राज्यों के बीच संचार की भाषा को लेकर बात कही गई है । इसमें कहा गया है कि संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए उस समय जो भाषा मौजूद रहेगी वही भाषा राज्य और संघ के बीच संपर्क भाषा रहेगी । यदि दो या अधिक राज्य आपसी सहमति से पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग करना चाहें तो कर सकते हैं ।

## अनुच्छेद 347

इसमें राज्यों में दूसरे राजभाषा को लेकर बात कही गई है । इसमें कहा गया है कि अगर किसी राज्य का जनसमुदाय द्वारा बोली जाने वाली भाषा को शासकीय मान्यता प्रदान करने की मांग की जाती है तो राष्ट्रपति उस भाषा को राज्य के सभी या कुछ कामों के लिए मान्यता देने के आदेश दे सकते हैं ।

**अनुच्छेद 348**

यह अनुच्छेद बहुत महत्वपूर्ण है । इसमें उच्चतम न्यायालय/उच्च न्यायालय और अधिनियमों की भाषा को लेकर बात कही गई है । इसमें कहा गया है कि जब तक कोई व्यवस्था न की जाए तब तक हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट की भाषा अंग्रेजी में होगी । केंद्र और राज्यों के सभी विधेयक, अधिनियम, आदेश आदि का पाठ अंग्रेजी में होगा ।

**अनुच्छेद-349**

संविधान में प्रारंभ से 15 साल तक के दौरान हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट की कार्यवाही अंग्रेजी के अलावा किसी अन्य भाषा में करने के लिए कोई संशोधन लोकसभा/राज्यसभा में राष्ट्रपति की पूर्वानुमति से ही लाया जाएगा ।

**अनुच्छेद-350**

अनुच्छेद-350 कहता है कि कोई भी व्यक्ति अपनी परेशानिओं के लिए संघ या राज्य के किसी भी अधिकारी को उस समय इस्तेमाल होने वाली राजभाषा में आवेदन दे सकता है ।

इसके अलावा अनुच्छेद-350 (क) में कहा गया है कि भाषायी अल्पसंख्यकों के लिए प्राथमिक स्तर में मातृ भाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था की जाए ।

**अनुच्छेद-351**

संविधान के इस अनुच्छेद में हिन्दी के विकास के लिए कुछ निर्देशों का जिक्र है । इसमें कहा गया है कि हिन्दी भाषा के प्रचार, विकास की जिम्मेदारी केंद्र सरकार की होगी ।

## भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएं कौन सी हैं

असमिया, बांग्ला, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओडिया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगू, उर्दू, बोडो, संथाली, मैथिली और डोगरी भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएं हैं ।

राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19): की धारा 3 की उपधारा (4) के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए , केंद्र सरकार इसके द्वारा निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात्;

1. संक्षिप्त शीर्षक, विस्तार और प्रारंभ -

    i. इन नियमों को राजभाषा (संघ के आधिकारिक प्रयोजनों के लिए उपयोग) नियम, 1976 कहा जा सकता है ।
    ii. इनका विस्तार तमिलनाडु राज्य को छोड़कर पूरे भारत में होगा ।
    iii. वे आधिकारिक राजपत्र में उनके प्रकाशन की तारीख से लागू होंगे ।

2. परिभाषाएँ - इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो: -

क. "अधिनियम" का अर्थ है राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19):

ख. "केंद्रीय सरकार कार्यालय" में शामिल हैं: -

    i. केंद्र सरकार का कोई भी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय,
    ii. केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त किसी आयोग, समिति या न्यायाधिकरण का कोई कार्यालय; और
    iii. केंद्र सरकार के स्वामित्व या नियंत्रण वाले किसी निगम या कंपनी का कोई कार्यालय;

क. "कर्मचारी" का अर्थ है केंद्र सरकार के कार्यालय में कार्यरत कोई भी व्यक्ति;

ख. "अधिसूचित कार्यालय" का अर्थ नियम 10 के उप-नियम (4) के तहत अधिसूचित कार्यालय है;

ग. "हिन्दी में प्रवीणता" का अर्थ है नियम 9 में वर्णित हिन्दी में प्रवीणता;

घ. "क्षेत्र ए" का अर्थ है बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य और दिल्ली और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के केंद्र शासित प्रदेश;

ड. "क्षेत्र बी" का अर्थ है गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य और केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़, दमन और दीव और दादरा और नगर हवेली;

च. "क्षेत्र सी" का अर्थ खंड (एफ) और (जी) में निर्दिष्ट राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के अलावा अन्य राज्य और केंद्र शासित प्रदेश हैं;

छ. "हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान" का तात्पर्य नियम 10 में वर्णित हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान है।

3. केंद्र सरकार के कार्यालयों के अलावा राज्यों आदि से संचार,-

क. केंद्र सरकार के कार्यालय से क्षेत्र "ए" के किसी राज्य या केंद्र शासित प्रदेश या ऐसे राज्य या केंद्र शासित प्रदेश के किसी भी कार्यालय (जो केंद्र सरकार का कार्यालय नहीं है) या व्यक्ति से संचार, असाधारण मामलों को छोड़कर, हिंदी में होगा, और यदि उनमें से किसी को अंग्रेजी में कोई संचार जारी किया जाता है तो उसके साथ उसका हिंदी अनुवाद भी संलग्न किया जाएगा।

ख. केंद्र सरकार के कार्यालय से संचार:-

ग. क्षेत्र "बी" में किसी राज्य या केंद्र शासित प्रदेश या ऐसे राज्य या केंद्र शासित प्रदेश में किसी भी कार्यालय (जो केंद्र सरकार का कार्यालय नहीं है) को आमतौर पर हिंदी में भेजा जाएगा और यदि उनमें से किसी को कोई संचार अंग्रेजी में जारी किया जाता है, तो वह होगा उसके हिंदी अनुवाद के साथ;

बशर्ते कि यदि ऐसा कोई राज्य या केंद्र शासित प्रदेश किसी विशेष वर्ग या श्रेणी या उसके किसी भी कार्यालय के लिए इच्छित संचार चाहता है, तो उसे संबंधित राज्य या केंद्र शासित प्रदेश की सरकार द्वारा निर्दिष्ट अवधि के लिए अंग्रेजी में या अंग्रेजी में भेजा जाना चाहिए। अन्य भाषा में अनुवाद के साथ हिंदी, इस तरह का संचार उसी तरीके से भेजा जाएगा;

क. किसी राज्य या केंद्र शासित प्रदेश के किसी भी व्यक्ति के लिए क्षेत्र "बी" हिंदी या अंग्रेजी में हो सकता है।

ख. केंद्र सरकार के कार्यालय से क्षेत्र "सी" में राज्य या केंद्र शासित प्रदेश या ऐसे राज्य में किसी भी कार्यालय (केंद्र सरकार का कार्यालय नहीं) या व्यक्ति से संचार अंग्रेजी में होगा।

ग. उप-नियम (1) और (2) में किसी बात के होते हुए भी, क्षेत्र "सी" में केंद्र सरकार के कार्यालय से क्षेत्र "ए" या क्षेत्र "बी" के किसी राज्य या केंद्र शासित प्रदेश या किसी भी कार्यालय (जो कि नहीं है) से संचार केंद्र सरकार कार्यालय) या ऐसे राज्य में व्यक्ति हिंदी या अंग्रेजी में हो सकता है।

बशर्ते कि हिंदी में संचार उतने अनुपात में होगा जितना केंद्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिंदी में संचार भेजने की सुविधाओं और उससे जुड़े प्रासंगिक मामलों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर निर्धारित कर सकती है।

4. केंद्र सरकार के कार्यालयों के बीच संचार ।

केंद्र सरकार के एक मंत्रालय या विभाग से दूसरे के बीच हिंदी या अंग्रेजी में हो सकता है;

क. केंद्र सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र "ए" में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच हिंदी भाषा का कामकाजी ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या को

ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार जितना अनुपात में हो, हिंदी में होगी। कार्यालय, हिंदी में संचार भेजने की सुविधाएं और उससे जुड़े प्रासंगिक मामले समय-समय पर निर्धारित करते हैं;

ख. क्षेत्र "ए" में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों के बीच, खंड (ए) या खंड (बी) में निर्दिष्ट कार्यालयों के अलावा, हिंदी में होगा;

ग. क्षेत्र "ए" में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र "बी" या क्षेत्र "सी" के कार्यालयों के बीच हिंदी या अंग्रेजी में हो सकता है:

बशर्ते कि ये संचार उसी अनुपात में हिंदी में होंगे, जिसे केंद्र सरकार ध्यान में रखे। ऐसे कार्यालयों में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिंदी में संचार भेजने की सुविधाएं और उससे जुड़े प्रासंगिक मामले समय-समय पर निर्धारित किए जाते हैं:

क. क्षेत्र "बी" या क्षेत्र "सी" में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों के बीच हिंदी या अंग्रेजी में हो सकता है;

बशर्ते कि ये पत्र-व्यवहार उस अनुपात में हिंदी में होंगे, जितना केंद्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिंदी का कामकाजी ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिंदी में संचार भेजने की सुविधाओं और उससे जुड़े प्रासंगिक मामलों को ध्यान में रखते हुए, समय-समय पर निर्धारित कर सकती है।;

बशर्ते कि ऐसे संचार का दूसरी भाषा में अनुवाद:-

I. जहां वह संचार क्षेत्र "क" या क्षेत्र "ख" के किसी कार्यालय को संबोधित है, यदि आवश्यक हो, तो प्राप्तकर्ता की ओर से प्रदान किया जाए;
II. जहां संचार क्षेत्र "ग" में किसी कार्यालय को संबोधित है, ऐसे संचार के साथ प्रदान किया जाएगा;

बशर्ते कि यदि संचार किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा कोई अनुवाद उपलब्ध कराने की आवश्यकता नहीं होगी।

### 5. हिंदी में प्राप्त संचार के उत्तर -

नियम 3 और 4 में किसी बात के बावजूद, केंद्र सरकार के कार्यालय से हिंदी में संचार के उत्तर हिंदी में होंगे।

### 6. हिंदी और अंग्रेजी दोनों का उपयोग -

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों का उपयोग किया जाएगा और यह सुनिश्चित करना ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने

वाले व्यक्तियों की जिम्मेदारी होगी कि ऐसे दस्तावेज सही हैं। हिंदी और अंग्रेजी दोनों में बनाया, निष्पादित या जारी किया गया।

## 7. आवेदन, अभ्यावेदन आदि -

कोई कर्मचारी हिंदी या अंग्रेजी में आवेदन, अपील या अभ्यावेदन प्रस्तुत कर सकता है ।

उप-नियम (1) में निर्दिष्ट कोई भी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन जब हिंदी में किया या हस्ताक्षरित किया जाता है, तो उसका उत्तर हिंदी में दिया जाएगा ।

जहां कोई कर्मचारी चाहता है कि सेवा मामलों (अनुशासनात्मक कार्यवाही सहित) से संबंधित कोई आदेश या नोटिस उसे हिंदी में या जैसा भी मामला हो, अंग्रेजी में दिया जाए, तो उसे बिना किसी देरी के उसी भाषा में दिया जाएगा ।

## 8. केंद्र सरकार के कार्यालयों में नोटिंग-

कोई कर्मचारी किसी फ़ाइल पर हिंदी या अंग्रेजी में कोई नोट या मिनट रिकॉर्ड कर सकता है, बिना किसी अन्य भाषा में उसका अनुवाद प्रस्तुत करने की आवश्यकता के ।

कानूनी या तकनीकी प्रकृति के दस्तावेजों के मामले को छोड़कर, हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाला कोई भी केंद्र सरकार का कर्मचारी हिंदी में किसी भी दस्तावेज़ का अंग्रेजी अनुवाद नहीं मांग सकता है ।

यदि कोई प्रश्न उठता है कि क्या कोई विशेष दस्तावेज़ कानूनी या तकनीकी प्रकृति का है, तो इसका निर्णय विभाग या कार्यालय के प्रमुख द्वारा किया जाएगा ।

उप-नियम (1) में किसी बात के बावजूद, केंद्र सरकार, आदेश द्वारा अधिसूचित कार्यालयों को निर्दिष्ट कर सकती है, जहां केवल हिंदी का उपयोग टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य आधिकारिक उद्देश्यों के लिए किया जाएगा जो कि दक्षता रखने वाले कर्मचारियों द्वारा आदेश में निर्दिष्ट किए जा सकते हैं। हिंदी में।

## 9. हिंदी में प्रवीणता -

एक कर्मचारी को हिंदी में दक्षता प्राप्त माना जाएगा यदि:-

क. उसने परीक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के साथ मैट्रिकुलेशन या कोई समकक्ष या उच्च परीक्षा उत्तीर्ण की हो; या

ख. उसने डिग्री परीक्षा या डिग्री परीक्षा के समकक्ष या उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

ग. वह इन नियमों के साथ संलग्न प्रपत्र में स्वयं को हिंदी में प्रवीणता घोषित करता है।

10. हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान-

क. यह माना जाएगा कि किसी कर्मचारी ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है - अगर वह पास हो गया -

i. एक विषय के रूप में हिंदी के साथ मैट्रिक या समकक्ष या उच्चतर परीक्षा; या
ii. केंद्र सरकार की हिंदी शिक्षण योजना के तहत आयोजित प्रज्ञा परीक्षा या जब किसी विशेष श्रेणी के पदों के संबंध में उस सरकार द्वारा निर्दिष्ट किया गया हो, तो उस योजना के तहत कोई निचली परीक्षा; या
iii. केंद्र सरकार द्वारा उस संबंध में निर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा; या

ख. यदि वह इन नियमों के साथ संलग्न प्रपत्र में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

1. केंद्र सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों को आमतौर पर हिंदी का कामकाजी ज्ञान प्राप्त हुआ माना जाएगा यदि वहां काम करने वाले अस्सी प्रतिशत कर्मचारियों ने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है।
2. केंद्र सरकार या केंद्र सरकार द्वारा इस संबंध में निर्दिष्ट कोई भी अधिकारी यह निर्धारित कर सकता है कि केंद्र सरकार के कार्यालय के कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।
3. केंद्र सरकार के कार्यालयों के नाम, जिनके कर्मचारियों ने हिंदी का कामकाजी ज्ञान प्राप्त कर लिया है, आधिकारिक राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे:

बशर्ते कि केंद्र सरकार की राय हो कि अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत और हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान किसी भी तारीख से उप-नियम (2) में निर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह आधिकारिक राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकता है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से एक अधिसूचित कार्यालय नहीं रहेगा।

11. मैनुअल, कोड, अन्य प्रक्रियात्मक साहित्य, स्टेशनरी के लेख, आदि-

केंद्र सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, कोड और अन्य प्रक्रियात्मक साहित्य, जैसा भी मामला हो, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और हिंदी और अंग्रेजी दोनों में डिग्लॉट रूप में प्रकाशित किया जाएगा ।

केंद्र सरकार के किसी भी कार्यालय में उपयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्रपत्र और शीर्षक हिंदी और अंग्रेजी में होंगे ।

केंद्र सरकार के किसी भी कार्यालय में उपयोग के लिए लिखे, मुद्रित या अंकित किए गए सभी नेम-प्लेट, साइन-बोर्ड, लेटर-हेड और लिफाफे और स्टेशनरी की अन्य वस्तुओं पर शिलालेख हिंदी और अंग्रेजी में होंगे ।

बशर्ते कि केंद्र सरकार, यदि सामान्य या विशेष आदेश द्वारा किसी भी केंद्रीय सरकारी कार्यालय को इस नियम के सभी या किसी भी प्रावधान से छूट देना आवश्यक माना जाता है।

1. अनुपालन की जिम्मेदारी-

   यह प्रत्येक केंद्र सरकार कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख की जिम्मेदारी होगी-

   i. यह सुनिश्चित करना कि अधिनियम के प्रावधानों और नियम (2) के तहत जारी इन नियमों और निर्देशों का उचित अनुपालन किया जाता है; और
   ii. इस उद्देश्य के लिए उपयुक्त और प्रभावी जांच-बिंदु तैयार करना।

2. केंद्र सरकार समय-समय पर अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को ऐसे निर्देश जारी कर सकती है जो अधिनियम और इन नियमों के प्रावधानों के उचित अनुपालन के लिए आवश्यक हो।

# रॉन्ग नम्बर

सुमित पटना से गिरिडोह जा रहा था । स्टेशन पर वर्षों बाद कॉलेज के सहपाठी से उसकी भेंट होने से दोंनो के मन में कॉलेज के दिनों की पुरानी सुखदायी स्मृतियां हिचकोले मारने लगी । वे एक दूसरे से हाथ मिला ही रहे थे कि उन्हे उनकी ट्रेन आने का अनाउंसमेंट सुनाई दिया । एक-दूसरे से पूछताछ के क्रम में पता चला कि वे दोनों एक ही ट्रेन से सफर करने वाले हैं ।

रमन ने कहा -चलो, अब ट्रेन में बैठकर घंटो बात करेंगे । पुरानी खट्टी-मिठी स्मृतियों  को ताज़ा करेंगें । सुमित ने भी हां में अपना सिर हिलाया । उसने सोचा भी कि आज का दिन कितना खुशनुमा है कि पुराने दोस्त से भेंट भी हो गई, नई पुरानी बातें भी होंगी और सफर भी आसानी से कट जाएगा । सुमित का सफर चार घंटे का, जबकि रमन का सफर  दो घंटे का था । ट्रेन आई । दोनों दोस्त ट्रेन के डिब्बे में सवार हो गए । जगह भी साथ-साथ बना ली ।  थोड़ी देर बाद जब सुमित ने देखा कि रमन अपनी नज़रें अपने मोबाइल से नही हटा पा रहा है । तो वही रमन से बातचीत शुरु करने के लिहाज़ से पूछ बैठा - अच्छा तो रमन बताओ अपने परिवार के बारे में, बच्चे क्या कर रहे हैं ?

रमन - थोडी देर रुको, एक मेसेज का जवाब दे लेने दो, फिर बताता हूं .

सुमित रमन का चेहरा देखता रहा । रमन कभी मंद मंद मुस्कुराता तो कभी हंसता, कभी मेसेज टाईप करता, कभी कॉल पर बात करता । इस तरह करते-करते दो घंटे का समय बीत गया । इस दरम्यान रमन की सुमित कोई बात नहीं हुई । देखते - देखते रमन के गंतव्य वाला स्टेशन भी आ चुका था । रमन वहां उतरने के लिए उठ खडा हुआ और सुमित ने कहा - सारी यार ! तुमसे बात नहीं हो सकी । ऐसा करो अपना मोबाइल नम्बर दे दो, ढेर सारी बातें करनी हैं तुमसे । मैं घर पहुचते ही तुमसे बात करुगा ।

सुमित ने रमन को रॉन्ग नम्बर दे दिया ।

सौजन्य: साहित्य अमृत

# औषधीय पेड़-पौधे, जड़ी-बूटियां और उनके वानस्पतिक नाम

## 1. नीम (Azadirachta indica)

एक चिपरिचित पेड़ है जो 20 मीटर की ऊंचाई तक पाया जाता है इसकी एक टहनी में करीब 9-12 पत्ते पाए जाते है। इसके फूल सफ़ेद रंग के होते हैं और इसका पत्ता हरा होता है जो पक्क कर हल्का पीला-हरा होता है।अक्सर ये लोगो के घरों के आस-पास देखा जाता है। नीम आयुर्वेद दवाओं में उपयोगी सिद्ध हुआ है, दिन-प्रतिदिन प्रयोग में भी नीम सर्वोत्तम माना जाता है ।

## 2. तुलसी (ocimum sanctum)

तुलसी एक झाड़ीनुमा पौधा है। इसके फूल गुच्छेदार तथा बैंगनी रंग के होते हैं तथा इसके बीज घुठलीनुमा होते है। इसे लोग अपने आंगन में लगाते हैं । तुलसी भी आयुर्वेद का उत्तम पौधा माना जाता है ,इसकी उपस्थिति सकारात्मकता का सूचक है । यह दवाइयां बनाने के लिए काम आता है ।

## 3. सदाबहार (Catharanthus roseus)

यह एक छोटा पौधा है जो विशेष देखभाल के बिना भी रहता है। चिकित्सा के क्षेत्र में इसका अपना महत्त्व है।इसकी कुछ टहनियां होती है और यह 50 सेंटी मीटर ऊंचाई तक बढ़ता है। इसके फूल सफ़ेद या बैगनी मिश्रित गुलाबी होते हैं।यह अक्सर बगान, बलुआही क्षेत्रो, घेरों के रूप में भी लगाया जाता है । इसे कैंसर चिकित्सा के लिए भी उत्तम माना जाता है ।

## 4. सहिजन / मुनगा(Moringa oleifera)

सहिजन एक लोकप्रिय पेड़ है।जिसकी ऊंचाई 10 मीटर या अधिक होती है । इसके छालों में लसलसा गोंद पाया जाता है। इसके पत्ते छोटे और गोल होते हैं तथा फूल सफेद होते हैं।इसके फूल पते और फल (जोकी) खाने में इस्तेमाल में लाये जाते हैं। इसके पत्ते (लौह) आयरन के प्रमुख स्रोत हैं जो गर्भवती माताओं के लिए लाभदायक है । सहिजन पौधे का प्रत्येक भाग खाने के प्रयोग में आता है ,इसका कसैला पन खून साफ रखने में लाभदायक होता है ।

## 5. करीपत्ता (Maurraya koengii)

करीपत्ता का पेड़ दक्षिण भारत में प्रायः सभी घरों में पाया जाता है। इसका इस्तेमाल मुख्यता भोजन में सुगंध के लिए इस्तेमाल किये जाते हैं।इसके पत्तों का सुगंध बहुत तेज़ होता है।इसकी छाल गहरे धूसर रंग के होती है इसके पत्ते अंडाकार, चमकीले और हरे रंग के होते हैं।इसके फूल सफ़ेद होते हैं एवं गुच्छेदार होते हैं।इसके फल गहरे लाल होते हैं जो बाद में बैगनी मिश्रित कालापन लिए होता है ।

## 6. घृतकुमारी/ घेंक्वार (Aloe vera):

यह एक से ढाई फूट ऊँचा प्रसिध्द पौधा है।इसकी ढाई से चार इंच चौड़ी,नुकीली एवं कांटेदार किनारों वाली पत्तियां अत्यंत मोटी एवं गूदेदार होती है पत्तियों में हरे छिलकेके नीचे गाढ़ा, लसलसा रंगीन जेली के सामान रस भरा होता है जो दवा के रूप में उपयोग होता है । सौंदर्य उत्पादों में इसका प्रयोग तीर्वता से बढ़ रहा है

**डिस्क्लेमर:** प्रस्तुत लेख में सुझाए गए टिप्स और सलाह केवल आम जानकारी के लिए हैं और इसे पेशेवर चिकित्सा सलाह के रूप में न लें

# चंद्रयान 3

वर्तमान में भारत सरकार द्वारा जारी किया गया चंद्रयान 3 मिशन बाकी सभी चंद्र मिशन से पूरी तरह अलग माना जा रहा है। चंद्रयान 3 मिशन को पूरा करने में लगभग 15 सालों की मेहनत लगी है। 15 सालों की लगातार मेहनत और रिसर्च के बाद आज भारत सरकार अपना यान चांद पर भेजने में सक्षम हुआ है। भारत के अंतरिक्ष विभाग इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन द्वारा 14 जुलाई 2023 को चंद्रयान लांच किया गया है। चंद्रयान 3 पृथ्वी से चंद्रमा की ओर बढ़ेगा। यह यान चंद्रमा पर पहुंचकर वहां की सभी जानकारी इसरो (ISRO) के साथ साझा करेगा। चंद्रयान 3 हमें चांद से जुड़ी जानकारी जैसे कि चंद्रमा की सतह की जानकारी, चंद्रमा के वायुमंडल की जानकारी, चंद्रमा पर मौजूद प्राकृतिक खनिजों की जानकारी आदि महत्वपूर्ण सूचनाएं प्रदान करेगा। चंद्रयान 3 इन सभी चीजों की जानकारी हमारे साथ साझा करेगा, जिन चीजों की जानकारी चंद्रयान-1 द्वारा हमारे साथ साझा की गई थी।

चंद्रयान-1 द्वारा भेजी गई सभी जानकारियों का विश्लेषण चंद्रयान 3 के माध्यम से किया जाएगा। चंद्रयान 3 को भारत के वैज्ञानिकों द्वारा बनाया गया है। यह पूरी तरह भारतीय तकनीक के साथ बनाया गया है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) द्वारा चंद्रयान 3 को इस तरह से बनाया गया है, कि यह यान जल्द से जल्द चांद की सतह पर लैंड करेगा। चांद पर जाकर झंडा फहराने का यह मिशन तीसरी बार भारत द्वारा चलाया जा रहा है। वही यदि चंद्रयान 3 मिशन सफल होता है तो चांद पर यान उतारने वाले देशों की सूची में भारत चौथे स्थान पर होगा। इस बार हम चांद पर जाकर सारे विश्व में अपना नाम अवश्य रोशन करेंगे।

- चंद्रमा की दक्षिणी ध्रुव पर पानी एवं बर्फ की मौजूदगी की जानकारी।
- चंद्रमा की सतह एवं उसकी संरचना की जानकारी।
- चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण बल की जानकारी।
- चंद्रमा में मौजूद वायुमंडल की जानकारी।
- चंद्रमा में मौजूद प्राकृतिक खनिज एवं विशेष खनिजों की जानकारी।

इतिहास रच दिया 23 अगस्त 2023 को चंद्र यान 3 ने चंद्रमा के साउथ पोल पर सॉफ्ट लैंडिंग की, इसी के साथ ऐसा करने वाला भारत पहला देश बन गया ।

**दीपक चंद्र बंदूनी, उच्च श्रेणी लिपिक**

# पैरा गेम्स

भारत के खेलो इंडिया कार्यक्रम में पहली बार पैरा गेम्स 10 से 17 दिसंबर तक दिल्ली में आयोजित किए गए । पैरा गेम्स आठ दिनों तक राजधानी दिल्ली के तीन स्टेडियमों में आयोजित किए गए। पैरा गेम्स में 32 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 1350 से ज्यादा एथलीट सात स्पर्धाओं में हिस्सा लिया। खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि देश में पैरा खेलों के लिए यह टूर्नामेंट 'गेम चेंजर' साबित हुआ।

ये सात स्पर्धाएं पैरा एथलेटिक्स, पैरा निशानेबाजी, पैरा तीरंदाजी, पैरा फुटबॉल, पैरा बैडमिंटन, पैरा टेबल टेनिस और पैरा वेटलिफ्टिंग हैं। यह टूर्नामेंट साइ के तीन स्टेडियम आईजी स्टेडियम, तुगलकाबाद निशानेबाजी रेंज और जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में खेली गई । हांगझोउ एशियाई पैरा खेलों के स्टार शीतल देवी, भाविना पटेल, एकता भयान, नीरज यादव, सिंघराज, मनीष, सोनल, राकेश कुमार और सरिता के पैरा खेलों में अपने संबंधित राज्यों का प्रतिनिधित्व किया है।

खेलो इंडिया गेम्स भारत सरकार की एक पहल है, जो 2017 में शुरू की गई थी। आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार, "खेलो इंडिया कार्यक्रम को सभी के लिए एक मजबूत ढांचा बनाकर जमीनी स्तर पर भारत में खेल संस्कृति को बढ़ावा के लिए पेश किया गया है। खेलो इंडिया का मुख्य मकसद ये है युवा ज्यादा से ज्यादा खेल से जुड़ सके। अब तक कुल 5 खेलो इंडिया यूथ गेम्स, 3 खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स और 3 खेलो इंडिया विंटर गेम्स आयोजित हो चुके हैं।

1. **खेलो इंडिया पैरा गेम्स 2023 का शुभंकर क्या है?**
   (क) 'शेरा' (ख) 'अर्जुन' (ग) 'उज्ज्वला' (घ) 'भीम'
2. **किस केन्द्रीय मंत्री ने दिव्यांग बच्चों के लिए आंगनवाड़ी प्रोटोकॉल पर राष्ट्रीय आउटरीच कार्यक्रम की शुरुआत की?**
   (क) राजनाथ सिंह (ख) अनुराग ठाकुर (ग) धर्मेन्द्र प्रधान (घ) स्मृति ईरानी
3. **एशिया के सबसे बड़े ओपन-एयर वार्षिक व्यापार मेले 'बाली यात्रा' का उद्घाटन किस राज्य में किया गया?**
   (क) उत्तर प्रदेश (ख) राजस्थान (ग) ओडिशा (घ) बिहार
4. **किस एयरलाइन ने हाल ही में ग्राहकों को फ्लाइट टिकट बुकिंग में मदद के लिए एआई चैटबॉट लांच किया है?**
   (क) इंडिगो (ख) एयर इंडिया (ग) विस्तारा (घ) स्पाइस जेट

**5. किसे हाल ही में दक्षिण अफ्रीका की महिला क्रिकेट टीम के तीनों फॉर्मेट का कप्तान बनाया गया है?**

(क) मिग्नॉन डु प्रीज़ (ख) मैरिज़ेन कप्प (ग) शबनीम इस्माइल (घ) लौरा वोल्वार्ट

**6. शोधकर्ताओं ने हाल ही में किस टाइगर रिजर्व में एक नई पौधे की प्रजाति की खोज की है?**

(क) कान्हा टाइगर रिजर्व (ख) कलक्कड़ मुंडनथुराई टाइगर रिजर्व (ग) सरिस्का टाइगर रिजर्व (घ) मेलघाट टाइगर रिजर्व

**7. भारत में संविधान दिवस प्रतिवर्ष कब मनाया जाता है?**

(क) 26 नवंबर (ख) 27 नवंबर (ग) 28 नवंबर (घ) 29 नवंबर

## उत्तर:

**1. (ग) 'उज्ज्वला'**

**पहली बार आयोजित होने वाले खेलो इंडिया पैरा गेम्स 2023 के 'लोगो' और शुभंकर 'उज्ज्वला' को नई दिल्ली में केन्द्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने लांच किया। 'उज्ज्वला'- एक गौरैया, को पैरा गेम्स 2023 के ऑफिसियल शुभंकर के रूप में घोषित किया गया है। इस खेल में सर्विसेज स्पोर्ट्स कंट्रोल बोर्ड सहित 32 राज्यों एवं केन्द्र-शासित प्रदेशों के 1400 से अधिक प्रतिभागियों के भाग लेने की उम्मीद है। वर्ष 2018 से अब तक कुल 11 खेलो इंडिया गेम्स सफलतापूर्वक आयोजित हो चुके हैं।**

**2. (घ) स्मृति ईरानी**

**केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने दिव्यांग बच्चों के लिए आंगनवाड़ी प्रोटोकॉल पर राष्ट्रीय आउटरीच कार्यक्रम शुरू किया। इस प्रोटोकॉल में दिव्यांगजन के समावेशी पोषण देखभाल के लिए एक सामाजिक मॉडल अपनाया गया है। इस प्रोटोकॉल का उद्देश्य विकलांग शिशुओं और छोटे बच्चों के समग्र विकास को सुनिश्चित करना है।**

**3. (ग) ओडिशा**

**ओडिशा की गौरवशाली प्राचीन समुद्री विरासत की स्मृति में एशिया के सबसे बड़े ओपन-एयर वार्षिक व्यापार मेले बाली यात्रा (Bali Jatra) का कटक में महानदी के तट पर उद्घाटन किया**

गया। इस साल यह त्योहार कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर शुरू हुआ और अगले महीने 4 दिसंबर तक चलेगा।

4. (क) इंडिगो

इंडिगो की मूल कंपनी इंटरग्लोब एविएशन लिमिटेड ने अपने ग्राहक सेवा अनुभव को बेहतर बनाने के लिए एआई चैटबॉट 6Eskai पेश किया है। इसकी मदद से ग्राहकों को फ्लाइट टिकट बुकिंग में मदद मिलेगी। इंटरग्लोब एविएशन लिमिटेड, इंडिगो के रूप में ऑपरेट करती है और यह भारत की कम लागत वाली एयरलाइन है. इसका मुख्यालय गुरुग्राम, हरियाणा में है।

5. (घ) लौरा वोल्वार्ट

लौरा वोल्वार्ट (Laura Wolvaardt) को पूर्णकालिक दक्षिण अफ्रीकी महिला कप्तान नियुक्त किया गया है। 24 वर्षीय वोल्वार्ट खेल के तीनों फॉर्मेट (T20I, वनडे और टेस्ट) में दक्षिण अफ्रीकी महिला टीम का नेतृत्व करेंगी। लौरा वोल्वार्ट भारत की महिला प्रीमियर लीग (WPL) में गुजरात जायंट्स की तरफ से खेलती है।

6. (ख) कलक्कड़ मुंडनथुराई टाइगर रिजर्व

शोधकर्ताओं ने तिरुनेलवेली के कलक्कड़ मुंडनथुराई टाइगर रिजर्व में जीनस 'इम्पेतिएन्स'-बाल्सामिनेसी (Impatiens'-Balsaminaceae) में एक नई पौधे की प्रजाति की खोज की है। एस. करुप्पुसामी के नाम पर इस प्रजाति का नाम 'इम्पेतिन्स करुप्पुसाम्यि' (Impatiens Karuppusamyi) रखा गया है। यह पौधा केवल दक्षिणी पश्चिमी घाट के अगस्त्यमलाई क्षेत्र में पाया जाता है।

7. (क) 26 नवंबर

भारत में संविधान दिवस प्रतिवर्ष 26 नवंबर को मनाया जाता है। यह दिवस भारतीय संविधान को अपनाने के उपलक्ष्य में हर साल मनाया जाता है। देश की संविधान सभा ने 26 नवंबर के दिन 1949 में औपचारिक रूप से संविधान को अपनाया था, जिसे 26 जनवरी 1950 को लागू किया गया था। साल 2015 में सरकार ने नागरिकों के बीच संवैधानिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए इस दिवस को मनाने का फैसला किया था।

# स्थल नीरीक्षण (साईट विज़िट)

आयोग के अध्यक्ष, सदस्यों, सचिव तथा सहायक सचिव (तकनीकी) ने 21 दिसम्बर 2023 को प्रेज़ीडेंट एस्टेट का साईट विज़िट किया ।

क) मौजूदा डिज़ाइन प्रस्ताव में मंच तक पहुंचने के लिए दोनों तरफ छोटी सीढ़ी हैं। शारीरिक रूप से अक्षम उपयोगकर्ताओं के लिए पहुंच सुगम करने के लिए, यह सुझाव दिया गया है कि सीढ़ियों के एक तरफ मंच तक पहुंच के लिए रैंप बनाया जाए। सीढ़ियों का अन्य सेट भी बेहतर/उपयुक्त रूप से विस्तृत होना चाहिए।

ख) योजना में दोनों लिंगों(महिला/पुरुष) के लिए शौचालय तक पहुंच के लिए एक साझा मार्ग शामिल है। गोपनीयता बढ़ाने के लिए, पुरुषों के शौचालय में एक स्क्रीन दीवार बनाए जाने का सुझाव दिया गया ।

ग) प्रस्तावित ओ.ए.टी के पास एक जल निकाय/प्रदर्शन है जिसे बेहतर विवरण के साथ अपग्रेड करने की सख्त जरूरत है, खासकर पत्थर और टाइलवर्क के लिए, जोकि मौजूदा इमारतों के दृश्यों को खराब करता है। आयोग इस बॉडी/डिस्प्ले में एक साथ उपयुक्त सुधार की सिफारिश की गई ।

**राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा उत्तर क्षेत्र -1 तथा उत्तर क्षेत्र -2 'संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह' का दिनांक 28 दिसंबर 2023 को जोधपुर, राजस्थान में आयोजन ।**

आयोग की ओर से राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षा श्रीमती रुबी कौशल, सचिव, दिल्ली नगर कला आयोग एवं श्रीमती कल्पना देवानी, क. अनुवाद अधिकारी, ने इस बैठक में भाग लिया ।

जोधपुर महानगर राजस्थान का सबसे बड़ा नगर है। राव जोधा ने 12 मई, 1459 ई. ने यहां के जोधपुर शहर की स्थापना की और नामकरण उन्हीं के नाम पर किया । इसकी

शहर की जनसंख्या 26 लाख के पार हो जाने के बाद इसे महानगर  घोषित कर दिया गया था। यह यहां के ऐतिहासिक रजवाड़े मारवाड़ की इसी नाम की राजधानी भी हुआ करता था। जोधपुर थार के रेगिस्तान के बीच अपने ढेरों शानदार महलों, दुर्गों और मन्दिरों वाला प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भी है।

वर्ष पर्यन्त चमकते सूर्य वाले मौसम के कारण इसे "सूर्य नगरी" भी कहा जाता है। यहां स्थित मेहरानागड़ को घेरे हुए हजारों नीले मकानों के कारण इसे "नीली नगरी" के नाम से भी जाना जाता था। यहां के पुराने शहर का अधिकांश भाग इस दुर्ग को घेरे हुए बसा है, जिसकी प्रहरी दीवार में कई द्वार बने हुए हैं, हालांकि पिछले कुछ दशकों में इस दीवार के बाहर भी नगर का वृहत प्रसार हुआ है। जोधपुर की भौगोलिक स्थिति राजस्थान के भौगोलिक केन्द्र के निकट ही है, जिसके कारण ये नगर पर्यटकों के लिये राज्य भर में भ्रमण के लिये उपयुक्त आधार केन्द्र का कार्य करता है।

जोधपुर शहर के लोग बहुत मिलनसार होते है, ये सदैव दूसरों की मदद के लिये तत्पर रहते है, उलझी हुई घुमावदार गलियाँ पटरियों पर लगी दुकानों से घिरी हैं। कलात्मक रूप से बनी हुई रंगबिरंगी पोशाकें पहने हुए लोगों को देखकर प्रतीत होता हैं कि जोधपुर की जीवनशैली असाधारण रूप से सम्मोहित करने वाली है। औरतें घेरदार लहंगा और आगे व पीछे के हिस्सों को ढकने वाली तीन चौथाई लंबाई की बांह वाली जैकेट पहनती हैं। पुरुषों द्वारा पहनी हुई रंगीन पगड़ियाँ शहर में और भी रंग बिखेर देती हैं। आमतौर से पहने जाने वाली ढ़ीली ढ़ाली और कसी, घुड़सवारी की पैंट जोधपुरी ने यहीं से अपना नाम पाया। जोधपुर के कपडो मैं जोधपुरी कोट  और जोधपुरी पगडी पूरे भारत  में प्रसिद्ध है।

जोधपुर शिक्षा के क्षेत्र में बहुत आगे हैं। दूर दूर से विद्यार्थी यहाँ पढ़ने के लिये आते है। जोधपुर को सीए की खान कहा जाता है। पूरे भारत  में सबसे ज्यादा सीए यहीं से निकलते है। शिक्षा के लिये यहां पर विकल्प मौजूद है। यहाँ विश्व प्रसिद्ध भारतीय प्रौध्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय विधि विश्वैद्यालय, एम्स, काजरी, आफरी, डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आर्युवेद विश्व विद्यालय, कृषि विश्व विद्यालय जोधपुर, राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान स्थित है। इनके अलावा जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय तथा साथ ही बालिकाओं के कमला नेहरू महिला महाविद्यालय कॉलेज है। जोधपुर में लगभग हर गांव में विद्यालय है।

उत्कृष्ट हस्तशिल्पों के समृद्ध संग्रह का रंगीन प्रदर्शन देख कर जोधपुर के बाजारों में खरीददारी करना एक उत्साहपूर्ण अनुभव है। बंदेज का कपड़ा, कशीदाकारी की हुई चमड़े, ऊँट की खाल, मखमल आदि की जूतियां आकर्षक रेशम की दरियां मकराना के संगमरमर

से बने स्मृतिचिन्ह, उपयोगी व सजावटी वस्तुओं की विस्तृत किस्में आदि इन बाजारों में पाई जाती हैं।

अनगिनत त्योंहारों, समृद्ध अतीत और शाही राज्य की संस्कृति का उत्सव मनाते हैं। वर्ष में एक बार विशाल पैमाने परमारवाड़ समारोह भी मनाया जाता है।

जोधपुर को राजस्थान की न्यायिक राजधानी कहा जाता है, राजस्थान का उच्च न्यायलय भी जोधपुर में ही स्थित है। जोधपुर पूरे विश्व से जुड़ने के लिये हवाई अड्डा भी मौजुद है। पूरे राजस्थान के प्रसिद्ध विभाग जैसे मौसम विभाग, नार्कोटिक विभाग सी बी आइ, कस्टम, वस्त्र मन्त्रालय आदि मौजूद है।

मेहरानगढ़ का किला, उमेद भवन पैलेस, जसवंत थडा, अध्यात्मिक ध्यान केंद्र, मेहरानगढ़ म्यूज़ियम ट्रस्ट जोधपुर अरनाझरना मरु सग्रालय, घंटाघर मार्केट, कायलान झील जोधपुर के दर्शनीय स्थान हैं ।

यहाँ खासतौर पर दूध निर्मित खाद्य पदार्थों का ज्यादा प्रयोग होता है। जैसे मावा का लड्डू, क्रीम युक्त लस्सी, मावा कचौरी, और दूध फिरनी आदि ।

यहाँ का मिर्ची वड़ा और प्याज़ कचौरी बहुत ही प्रसिद्ध है। भोजन में प्राय यहाँ बाजरे का आटे से बनी रोटियां, जिन्हें सोगरा कहते हैं, प्रमुखता से खाया जाता है। सोगरा किसी भी चटनी,साग आदि के साथ खाया जाता है। जो खाने में स्वादिष्ट होता है। इसी प्रकार छाछ और प्याज भी इसके साथ खाया जाता है।

# यात्रा के

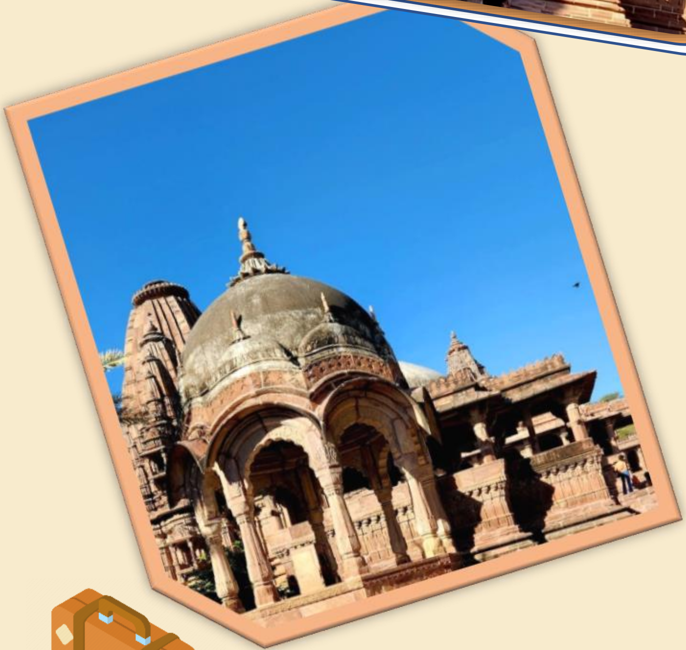

# सुनहरे पल

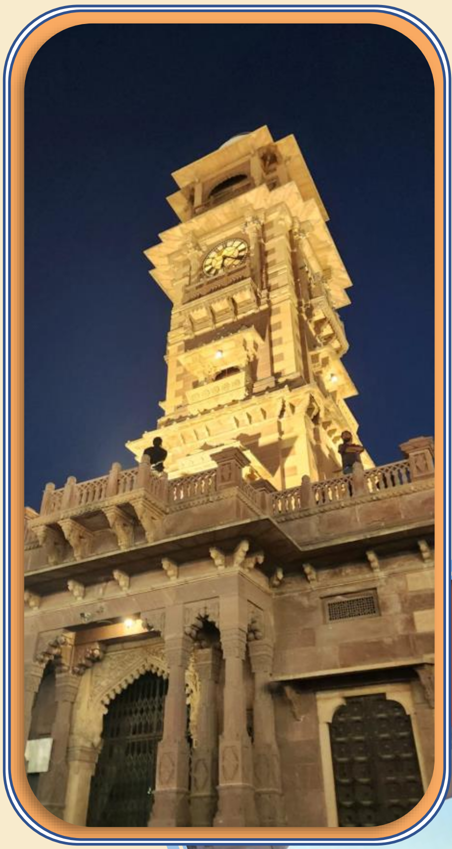

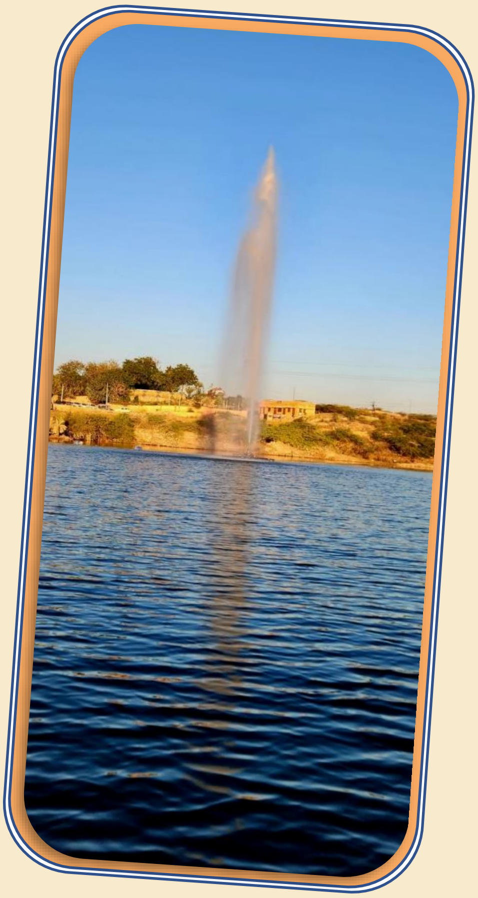

# राम मंदिर

भारतवर्ष के लिए 22 जनवरी 2024 का दिन बेहद शुभ है। इतिहास के पन्नों में इस तिथि का अंकन सुनहरे अक्षरों में होगा। इस दिन अयोध्या स्थित राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा किया गया । इस अनुष्ठान में रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई। इस धार्मिक अनुष्ठान की शुरुआत 16 जनवरी से हुई । इसके लिए महाभव्य तैयारी की गई। ज्योतिषियों की मानें तो पौष माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि पर एक, दो नहीं, बल्कि 7 शुभ और अद्भुत संयोग थे । इन योग में रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई।

ज्योतिषियों की मानें तो मकर संक्रांति के दिन सूर्य देव उत्तरायण थे । उत्तरायण देवताओं के लिए दिन का समय होता है। इस दौरान प्रकाश में वृद्धि होने लगती है। इसी दिन से युगारंभ भी होता है। अतः रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के लिए मकर संक्रांति के पश्चात की तिथि का चयन किया गया । इस दिन पौष माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी एवं त्रयोदशी तिथि थी। द्वादशी तिथि संध्याकाल 07 बजकर 51 मिनट तक था। इसके पश्चात, त्रयोदशी तिथि थी। वहीं, नक्षत्र मृगशिरा था।

पौष माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि अर्थात 22 जनवरी को सर्वप्रथम ब्रह्म योग का निर्माण हुआ। इस योग का निर्माण सुबह 08 बजकर 47 मिनट तक था। इसके पश्चात, इंद्र योग का निर्माण था। इस योग में ही रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा , प्रधान मंत्री श्री  नरेंद्र मोदी  द्वारा की गई। राम मंदिर निर्माण से अयोध्या में न केवल पर्यटन को प्रोतसाहित किया ,इसके साथ रोज़गार को भी बढ़ावा दिया है

**सिदार्थ सागर, वा. सहायक**

**डिसक्लेमर: इस लेख में निहित किसी भी जानकारी/सामग्री/गणना की सटीकता या विश्वसनीयता की गारंटी नहीं है। विभिन्न माध्यमों/ज्योतिषियों/पंचांग/प्रवचनों/मान्यताओं/धर्मग्रंथों से संग्रहित कर ये जानकारियां आप तक पहुंचाई गई हैं। हमारा उद्देश्य महज सूचना पहुंचाना है, इसके उपयोगकर्ता इसे महज सूचना समझकर ही लें। इसके अतिरिक्त, इसके किसी भी उपयोग की जिम्मेदारी स्वयं उपयोगकर्ता की ही रहेगी।**

# महाशिवरात्रि

महाशिवरात्रि वह महारात्रि है जिसका शिव तत्व से घनिष्ठ सम्बन्ध है। यह पर्व शिव के दिव्य अवतरण का मंगल सूचक पर्व है। उनके निराकार से साकार रूप में अवतरण की रात्रि ही महाशिवरात्रि कहलाती है। वह हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर आदि विकारों से मुक्त करके परम सुख शान्ति और ऐश्वर्य प्रदान करते हैं ।

महाशिवरात्रि से जुड़ी कथाएं पहली पौराणिक कथा के अनुसार,फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि पर भगवान शिव सबसे पहले शिवलिंग के स्वरूप में प्रगट हुए थे। इसी कारण से इस तिथि को भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग के प्रकाट्य पर्व के रूप में हर वर्ष महाशिव रात्रि के रूप में मनाया जाता है। शिव पुराण के अनुसार शिवजी के निराकार स्वरूप का प्रतीक 'लिंग' शिवरात्रि की पावन तिथि की महानिशा में प्रकट होकर सर्वप्रथम ब्रह्मा और विष्णु के द्वारा पूजित हुआ था। वहीं स्कंद पुराण में कहा है कि आकाश स्वयं लिंग है, धरती उसका पीठ या आधार है और सब अनंत शून्य से पैदा हो उसी में लय होने के कारण इसे लिंग कहा गया है ।

वहीं दूसरी पौराणिक कथा के अनुसार महाशिवरात्रि पर भगवान शिव और देवी मां पार्वती का मिलन हुआ था। फाल्गुन चतुर्दशी तिथि पर भगवान शिव ने वैराग्य छोड़कर देवी पार्वती संग विवाह करके गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया था। इसी वजह से हर वर्ष फाल्गुन चतुर्दशी तिथि को भगवान शिव और माता पार्वती के विवाह की खुशी में महाशिवरात्रि का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन शिवभक्त कई स्थानों पर महाशिवरात्रि पर शिव जी की बारात निकालते हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार महाशिवरात्रि पर व्रत, पूजा और जलाभिषेक करने पर वैवाहिक जीवन से जुड़ी तमाम तरह की परेशानियां दूर होती हैं और दांपत्य जीवन में सुख-समृद्धि आती है। इसके अलावा महाशिवरात्रि के दिन ही सभी द्वादश ज्योतिर्लिंग प्रगट हुए थे। इस कारण से 12 ज्योतिर्लिंग के प्रगट होने की खुशी में महाशिवरात्रि का त्योहार मनाया जाता है।

**रविंद्र कुमार, व. आशुलिपिक**

# लोहड़ी, मकर संक्रांति, पोंगल और माघ बिहू

भारत में हमेशा से कई अलग-अलग सांस्कृतिक पहचान रही हैं। प्रत्येक संस्कृति के अपने त्यौहार होते हैं जिनका महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रभाव होता है। इनमें से कुछ त्यौहार, जिनमें **लोहड़ी** , **मकर संक्रांति** , **पोंगल** और **माघ बिहू** शामिल हैं , जनवरी में मनाए जाते हैं। उनमें से प्रत्येक का एक अनोखा अतीत और महत्व है। लोहड़ी का भारतीय अवकाश ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। मकर संक्रांति से एक दिन पहले लोग प्रार्थना करने और खुशी मनाने के लिए अलाव के आसपास इकट्ठा होते हैं। उत्तरी भारत में यह छुट्टियाँ बड़े पैमाने पर ऊर्जावान और आनंदपूर्वक मनाई जाती हैं। लोहड़ी को फसल उत्सव के रूप में भी जाना जाता है, जिसके दौरान किसान रोपण के मौसम के समापन का जश्न मनाते हैं और लोक संगीत का आनंद लेते हैं।

यह छुट्टी लगभग हर राज्य में एक अलग नाम से मनाई जाती है। पंजाब और हरियाणा में इसे लोहड़ी और उत्तर प्रदेश में खिचड़ी कहा जाता है ।

असम में माघ बिहू, बिहार में तिल संक्रांति, तमिलनाडु में पोंगल, केरल में मकर विलाक्कू, गुजरात में वासी उत्तरायण और पूर्वोत्तर में पौष संक्रांति मनाई जाती है।

# 'अमृत उद्यान'

भारत की माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन के प्रसिद्ध मुगल गार्डन का नाम बदलकर 'अमृत उद्यान' कर दिया है। राष्ट्रपति भवन में कुल 5 गार्डन हैं जिनमें से एक को मुगल गार्डन के नाम से जाना जाता था। फूलों के खूबसूरत और यूनिक बगीचों का नज़ारा लिया जा सकता है। 100 से ज्यादा गुलाब की किस्मों को भी देखा जा सकता है। जो भी एक बार इस उद्यान को देख लेता है वो सदा के लिए यादे संजो लेता है। 15 एकड़ में उद्यान फैला हुआ है और यहां हमेशा वातावरण में फूलों की खुशबू महकती रहती है।

ब्रिटिश राज में साल 1911 में जब अंग्रेजों ने कोलकाता के बदले दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया था तब रायसीना की पहाड़ी को काटकर वायसराय हाउस (मौजूदा राष्ट्रपति भवन) बनाने का फैसला किया गया। इसे बनाने के लिए खासतौर से इंग्लैंड से ब्रिटिश वास्तुकार सर एडिवन लूटियंस को बुलाया गया, हर साल लाखों लोगों को राष्ट्रपति भवन के मुगल गार्डन खुलने का इंतजार होता है। फरवरी तथा नवम्बर माह में इसे जन-सामान्य के लिए खोला जाता है।

# रंगो का त्योहार होली

होली रंगो का तथा हंसी खुशी  का त्योहार है । यह भारत का एक प्रमुख और प्रसिद्ध त्योहार है, जो आज विश्वभर में मनाया जाने लगा है। हर साल फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन होली मनाई जाती है। इस दिन पूरा देश गुलाल, अबीर पर प्यार के रंग में सरोबार रहता है । होली के रंगो को प्रेम का प्रतीक भी माना जाता है । कृष्ण नगरी मथुरा में धूमधाम से होली का पर्व मनाया जाता है ।

धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक, माता पार्वती महादेव से विवाह के लिए कठिन तप कर रही थी। वहीं भगवान शिव भी अपनी तपस्या में लीन थे। शिवजी और मां गौरी के पुत्र के हाथों द्वारा ही राक्षस ताड़कासुर का वध निश्चित था। ऐसे में भोलेनाथ और माता का विवाह होना बहुत ही जरूरी था। तब इंद्र और अन्य देवताओं ने मिलकर कामदेव को शिवजी की तपस्या भंग करने के लिए भेजा। कामदेव ने शिवशंकर की तपस्या भंग करने के लिए उनपर 'पुष्प' वाण छोड़ा दिया। इससे शिवजी जी की समाधि भंग हो गई और उन्होंने क्रोध में आकर अपना तीसरा नेत्र खोलकर कामदेव को भस्म कर दिया। लेकिन शिवजी की तपस्या तो भंग हो चुकी थी तब देवताओं ने उन्हें पार्वती जी के साथ विवाह करने के लिए राजी कर लिया। वहीं कामदेव की पत्नी रति ने अपने पति को दोबारा जीवित करने की प्रार्थना की। तब रति को अपने पति के पुनर्जीवन का वरदान मिला। वहीं शिवजी और माता पार्वती के विवाह की खुशी में देवताओं ने इस दिन को उत्सव की तरह मनाया। कहते हैं वो दिन फाल्गुन पूर्णिमा का ही दिन था।

**भक्त प्रह्लाद की कथा**

पौराणिक प्रचलित कथा के अनुसार, भक्त प्रह्लाद भगवान विष्णु के बहुत बड़े भक्त थे। उनके पिता हिरण्यकश्यप को अपने बेटे की यह भक्ति बिल्कुल रास नहीं आती थी। एक बार उन्होंने अपनी बहन होलिका के साथ प्रह्लाद को मारने की साजिश रची। दरअसल, होलिका को ऐसा वस्त्र वरदान में मिला हुआ था जिसको पहन कर आग में बैठने से उसे आग नहीं जला सकती थी। यही वस्त्र पहनकर होलिका प्रह्लाद को लेकर आग में बैठ गई। भगवान विष्णु के आशीर्वाद से भक्त प्रह्लाद को कुछ नहीं हुआ और होलिका आग में जल गई। बुराई पर अच्छाई की जीत और शक्ति पर भक्ति की विजय के रूप में होली का पर्व मनाया जाता है।

**राधा-कृष्ण से जुड़ी कथा**

मान्यताओं के मुताबिक, भगवान कृष्ण का रंग सांवला था और राधा रानी गोरी थीं। इस बात को लेकर अक्सर कान्हा अपनी मईया यशोदा से शिकायत करते थे कि वह क्यों नहीं गोरे हैं। इसके बाद एक दिन यशोदा जी ने भगवान कृष्ण को कहा कि जो तुम्हारा रंग है उसी रंग को राधा के चेहरे पर भी लगा दो फिर तुम दोनों का रंग एक जैसा हो जाएगा। फिर क्या था कृष्ण अपनी मित्र मंडली ग्वालों के साथ राधा को रंगने के लिए उनके पास पहुंच गए। कृष्ण ने अपने मित्रों के साथ मिलकर राधा और उनकी सखियों को जमकर रंग लगाया। कहते हैं कि तब से ही रंग वाली होली की परंपरा शुरू हुई। आज भी मथुरा में भव्य और धूमधाम तरीके से होली खेली जाती है।

**Disclaimer: यहां दी गई जानकारियां धार्मिक आस्था और लोक मान्यताओं पर आधारित हैं। इसका कोई भी वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**

# विश्व पटल पर भारत की सॉफ्ट पावर का पंच, इन 5 भारतीय संगीतकारों पर हुई ग्रैमी अवॉर्ड की बारिश

भारत केवल आर्थिक शक्ति के रूप में ही नहीं उभर रहा, बल्कि संगीत आदि के क्षेत्र में भी इसका दबदबा विश्व पटल पर बढ़ रहा है। अमेरिका के लॉस एंजिलिस में रविवार की रात आयोजित 66वें ग्रैमी अवार्ड में भारतीय संगीतकारों ने इसे साबित किया है। इस दौरान भारत पर पुरस्कारों की बारिश हुई। पांच भारतीयों ने इस दौरान अवॉर्ड जीते।

इसमें तबला वादक जाकिर हुसैन, वांसुरी वादक राकेश चौरसिया, शंकर महादेवन आदि शामिल हैं। इस कार्यक्रम में जाकिर हुसैन को तीन, जबकि राकेश चौरसिया को दो अवॉर्ड मिले। फ्यूज़न ग्रुप शक्ति में हुसैन के सहयोगी गायक शंकर महादेवन, वायलिन वादक गणेश राजगोपालन और परकशनिस्ट सेल्वगनेश विनायकराम को एक-एक ग्रैमी अवॉर्ड मिला।

शक्ति को दिस मोमेंट के लिए 2024 का बेस्ट ग्लोबल म्यूजिक एल्बम अवॉर्ड दिया गया। इस एल्बम में चार भारतीयों के साथ साथ इसके संस्थापक सदस्य-प्रसिद्ध ब्रिटिश गिटारवादक जान मैकलाघलिन भी शामिल हैं। दिस मोमेंट जून 2023 में रिलीज हुआ था। शक्ति के लिए पुरस्कार के अलावा जाकिर हुसैन ने दो अन्य पुरस्कार जीते। इनमें पश्तो के लिए बेस्ट ग्लोबल म्यूजिक परफार्मेंस अवार्ड और एज वी स्पीक के लिए बेस्ट कंटेंपरेरी इंस्ट्रूमेंटल एल्बम का अवार्ड शामिल है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस उपलब्धि के लिए सभी को बधाई दी। उन्होंने एक्स पोस्ट पर लिखा है कि आपकी अभूतपूर्व सफलता पर बधाई। आपकी असाधारण प्रतिभा और संगीत के प्रति समर्पण ने दुनिया भर का दिल जीत लिया। भारत को गर्व है। ये उपलब्धियां आपके द्वारा की जा रही कड़ी मेहनत का प्रमाण हैं। यह नई पीढ़ी के कलाकारों को बड़े सपने देखने और संगीत में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए भी प्रेरित करेगी।

ग्रैमी अवॉर्ड 2024 के बेस्ट ग्लोबल म्यूजिक परफॉर्मेंस श्रेणी में एबंडेंस इन मिलेट्स गीत को नामांकित किया गया है, ये वही गीत है जिसे लिखने में पीएम मोदी ने फालू और उनके पति गौरव शाह का सहयोग किया था। जी हां, शुक्रवार को आए ग्रैमी अवॉर्ड्स 2024 की लिस्ट में 'एबंडेंस इन मिलेट्स' का भी नाम है। प्रधानमंत्री मोदी ने सिंगर फाल्गुनी शाह और गौरव शाह के साथ इस गाने को लिखा है। ऐसा पहली बार है जब किसी राजनेता को दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित ग्रैमी नॉमिनेशन में जगह मिली हो। इस गाने में मिलेट्स फूड यानी बाजरा की खेती और अनाज के तौर पर इसकी उपयोगिता के बारे में बात की गई है।

पीएम मोदी के सुझाव पर वर्ष 2023 को 'अंतराष्ट्रीय मिलेट्स' वर्ष के तौर पर मनाया जा रहा है । पी एम मोदी लगातार देश के मोटे अनाजों को भोजन का मुख्य अंग बनाने पर ज़ोर देते रहे हैं । इसी क्रम में पीएम मोदी ने दुनिया को मोटे अनाज के लाभ से परिचित कराने के लिए गैमी पुरस्कार विजेता फाल्गुनी शाह और उनके पति गौरव शाह के साथ एक गीत लिखा था । इस मिलेट्स गीत को ग्रैमी अवार्ड के बेस्ट ग्लोबल म्यूज़िक परफामेन्स श्रेणी में नामांकित किया गया है ।

# बसंत पंचमी

बसंत पंचमी या वसंत पंचमी उत्सव माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि अर्थात आज, 14 फरवरी, 2024 को मनाया जाता है। बसंत पंचमी, या वसंत पंचमी, एक त्योहार जोकि वसंत के आगमन की शुरुआत करता है और व्यापक रूप से मनाया जाता है।

ऐसी मान्यता है बसंत पंचमी के दिन मां सरस्वती का जन्म हुआ था, इसीलिए बसंत पचंमी का पर्व माघ माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है।

हिंदू परंपराओं के अनुसार पूरे वर्ष को छह ऋतुओं में बांटा गया है, जिसमें वसंत को सभी ऋतुओं का राजा कहा जाता है। जिस दिन से वसंत ऋतु की शुरुआत होती है, उस दिन को वसंत पंचमी के पर्व के रूप में मनाया जाता है।

**रवि शंकर रॉय, क. आशुलिपिक**

# ट्यूलिप फेस्टिवल

नई दिल्ली नगर पालिका परिषद की ओर से चाणक्यपुरी के शांति पथ पर ट्यूलिप फेस्टिवल का आयोजन किया गया । ट्यूलिप फेस्टिवल में नीदरलैंड से आए फूलों ने शांति पथ की शोभा बढ़ाई ।

**‘A thing of beauty is joy forever’**

# महापुरुषों के वचन

1. बिना निराश हुए ही हार को सह लेना, पृथ्वी पर साहस की सबसे बड़ी परीक्षा है।

   **- आर. जी. इंगरसोल**

2. भविष्य में ऐसा कोई समय नहीं है, जिसमें हम अपना उद्धार कर लेंगे। चुनौती इस पल में है, सही समय हमेशा अब है।

   **- जेम्स बाल्डविन**

3. वाणी मधुर हो तो सब कुछ वश में हो जाता है, अन्यथा सब शत्रु बन जाते हैं।
   **- शेख सादी**

4. सभी तूफ़ान आपके जीवन को बाधित करने के लिए नहीं आते हैं, कुछ आपका रास्ता साफ़ करने के लिए आते हैं।
   **- पाउलो कोएल्हो**

5. आधुनिकता कपड़ों से नहीं, विचारों से आती है।
   **- रवीन्द्रनाथ टैगोर**

6. असंभव कहकर किसी काम को करने से पहले, कर्मक्षेत्र में काँपकर लड़खड़ाओ मत।
   **- जयशंकर प्रसाद**

7. अगर आपको पक्षियों की आवाज़ पसंद है तो पिंजरे मत बनाइए, पेड़ लगाइए।
   **- अज्ञात**

8. कुछ कर गुज़रने के लिए मौसम नहीं, मन चाहिए।
   **- रमानाथ अवस्थी**

9. जो चीज़ तुम्हें रुलाती है वही तुम्हारा मोह है।
   **- ओशो**

10. सोते को जगाया जा सकता है पर कोई सोने का ढोंग करके पड़ा हो तो उसे कैसे जगाया जाए ?
    **- श्रीलाल शुक्ल**

11. शत्रु को ख़त्म करने का सबसे आसान तरीक़ा है कि उसे अपना मित्र बना लो।
    **- अब्राहम लिंकन**

12. खुशी का संबंध आपकी मानसिकता से है, बाहरी परिस्थितियों से नहीं।
    **- स्टीव मारबोलिक**

**13.** जीवन का अंतिम ध्येय स्वयं जीवन है।

**- रामधारी सिंह 'दिनकर'**

**14.** अगर आप में ग़लत को ग़लत कहने की क्षमता नहीं है तो आपकी प्रतिभा व्यर्थ है।

**- भीमराव अंबेडकर**

**15.** पाँव खोलो तो धरती अपनी है, पंख खोलो तो आसमान!

**- अमृता प्रीतम**

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) के तहत निम्नलिखित दस्तावेज़ अनिवार्य रुप से द्विभाषी (हिंदी और अंग्रेज़ी) में जारी किए जाएं ।

1) संकल्प
2) सामान्य आदेश
3) नियम
4) अधिसूचनाएं
5) प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट
6) प्रेस विज्ञपतियां
7) संसद के समक्ष किसी सदन या दोनों सदनों में प्रस्तुत की जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट
8) संसद के समक्ष प्रस्तुत किए जाने वाले दस्तावेज़
9) संविदाएं
10) करार
11) अनुज्ञप्तियां
12) अनुज्ञापत्र
13) टेंडर नोटिस
14) टेंडर फार्म

# दिल्ली नगर कला आयोग

कोर - 6ए, यू. जी. तथा प्रथम तल,

भारत पर्यावास केन्द्र, लोधी रोड, नई दिल्ली - 110003

दूरभाष : 011- 24619593, 24690821